"नराशंस और अन्तिम ऋषि"

(ऐतिहासिक शोध)

डॉ० वेदप्रकाश उपाध्याय

नराशंस और अन्तिम ऋषि

(ऐतिहासिक शोध)

लेखक

डॉ॰ वेदप्रकाश उपाध्याय

एम॰ ए॰ (इलाहाबाद), एम॰ ए॰ (जे॰ एन॰ यू॰, अमृतसर)
एल॰ एल॰ बी॰ डी॰ फ़िल॰ डी॰ लिट॰ (इलाहाबाद आचार्य)
वेद, दर्शन, धर्मशास्त्र, डिप॰ इन जर्मन, स्वर्ण पदक-प्राप्त,
रीडर, पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़

प्रकाशक

ख़ालिद बुक डिपो, कोटा (राज॰)

विषय-सूची

अध्याय-1	4
अध्याय-2	8
अध्याय-3	13
अध्याय-4	20
अध्याय-5	31
अध्याय-6	43

मूल्य : 20.00

भूमिका

ऐतिहासिक विषयों पर शोध करने की मेरी उत्कट अभिलाषा सदैव रहती है। वेदों में, बाइबिल में तथा बौद्ध ग्रन्थों में अन्तिम ऋषि के रूप में जिसके आने की घोषणा की गई थी, वह मोहम्मद साहब ही सिद्ध होते थे, अतः मेरे अन्तःकरण ने मुझे यह प्रेरणा दी, कि सत्य को खोलना आवश्यक है, भले ही वह लोगों को बुरा लगने वाला हो। मोहम्मद साहब के पूर्व भारत तथा अरब के निवासियों का धर्म एक था, इस विषय से सम्बद्ध अनेक प्रमाण हैं, जिन्हें यहाँ निर्दिष्ट करना उपयुक्त नहीं। धर्म की संकुचित भावना का मैं पक्षपाती नहीं। कोई भी बात किसी भी स्थल में यदि उपयुक्त एवं उचित कही गई है, तो उसका बहिष्कार करने का मैं साहस नहीं करता। वेदों में बारह पत्नी वाले एक उष्ट्रारोही व्यक्ति के होने की भविष्यवाणी है, जिसका नाम 'नराशंस' है। 'नराशंस' का अर्थ सायण ने किया है, कि जो मनुष्यों द्वारा प्रशंसित हो।[1] मेरे विचार इस स्थल में सायण से सहमत नहीं, क्योंकि मेरे मत से 'नराशंस' शब्द ऐसे 'नर' अर्थात् व्यक्ति का सूचक है, जो प्रशंसित हो। 'मोहम्मद' शब्द 'नराशंस' का अरबी अनुवाद है। प्रस्तुत पुस्तक में मैंने यथाशक्ति सत्य को उद्घाटित करने का प्रयत्न किया है। पाठकों से निवेदन है, कि पुस्तक पर अपने विचार अवश्य भेजें।

वेदप्रकाश उपाध्याय

माधव मास,
शुक्ल पक्ष द्वादशी,
तिथि, सं. 2027

---

1. 'नराशंसः यो नरैः प्रशस्यते।'

—सायण भाष्य, ऋग्वेद संहिता, 5/5/1

प्रथम अध्याय

नराशंस शब्द का अर्थ

'नराशंस' शब्द 'नर' और 'आशंस' दो शब्दों से मिलकर बना है। 'नर' का अर्थ होता है मनुष्य और 'आशंस' का अर्थ होता है, 'प्रशंसित' (Praised) । यह स्मरणीय है, कि 'आशंस' शब्द वैदिक भाषा का शब्द है, न कि लौकिक भाषा का। 'नराशंस' शब्द का कुछ लोग अर्थ करते हैं—'मनुष्य की प्रशंसा' तथा कुछ लोगों के अनुसार 'नराशंस' शब्द का अर्थ होता है—'मनुष्यों द्वारा प्रशंसित'। प्रथम अर्थ षष्ठी तत्पुरुष समास से निकलता है तथा दूसरा अर्थ तृतीया तत्पुरुष समाज से निकलता है। विचारणीय यह है, कि वास्तव में 'नराशंस' शब्द का क्या अर्थ होगा? तृतीया तत्पुरुष या षष्ठी तत्पुरुष से निष्पन्न अर्थ संगत नहीं हैं क्योंकि 'नराशंस' के सूक्तों में किसी विशेष व्यक्ति की प्रशंसा है, अतः जिसकी प्रशंसा 'नराशंस' विषयक वर्णन में है, 'नराशंस' शब्द से उसी व्यक्ति का बोध होगा। 'नराशंस' शब्द कर्मधारय समास है, जिसका विच्छेद 'नरश्चासौ आशंसः' अर्थात् 'प्रशंसित मनुष्य' होगा, इसलिये 'नराशंस' शब्द से किसी देवता को भी न समझना चाहिये। 'नराशंस' शब्द स्वतः ही इस बात को स्पष्ट कर देता है, कि 'प्रशंसित' शब्द जिसका विशेषण है, वह मनुष्य है। यदि कोई 'नर' शब्द को देववाचक माने, तो उसके समाधान में इतना स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि 'नर' शब्द न तो देवता का पर्यायवाची शब्द ही है, और न तो देवयोनियों के अन्तर्गत कोई विशेष जाति।

देवजाति—देवताओं की दस जाति हैं—

विद्याधर, अप्सरस्, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्ध और भूत।[1]

1. विद्याधर—दवताओं की यह जाति अधिक विद्वान् होती है। विद्या को धारण करने के ही कारण तो इनका नाम विद्याधर पड़ा है।

2. अप्सरस्—जल पर से विचरण करने के कारण इन्हें 'अप्सरस्'

---

1. विद्याधरोऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नरः।
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः॥

—अमरकोश स्वर्ग-वर्ग 11वाँ श्लोक

कहा जाता है।[2]

3. **यक्ष**—जिनकी पूजा की जाती है, वे यक्ष कहे जाते हैं।

4. **राक्षस**—जो लोग इन्हें मानते हैं, उनकी ये अन्य देवों से रक्षा करते हैं।

5. **गन्धर्व**—ये केवल गन्ध को ही पसन्द करते हैं।[3]

6. **किन्नर**—ये मनुष्यों के आकार में सदा रहते हैं, परन्तु जब चाहते हैं, तब अपना रूप भी बदल लेते हैं। ये बहुत ही बुरे देव हैं।[4]

7. **पिशाच**—ये अन्य प्राणियों को मारकर उनका माँस खा जाते हैं, इसीलिए इन्हें पिशाच कहा जाता है।

8. **गुह्यक**—ये बहुत सी निधियों को रखते हैं, और उनकी रक्षा करते हैं। इनके अधिकार में बहुत से कोषागार रहते हैं, जो पृथ्वी या पर्वतों में छिपे रहते हैं।

9. **सिद्ध**—ये परमेश्वर के समीप सदा रहते हैं। इन्हें परमेश्वर की सिद्धि प्राप्त होती है। ये जो कुछ कह देते हैं, सब सत्य हो जाता है। ये कभी असत्य नहीं बोलते। ये बहुत ही अच्छे देव हैं। इन्हें सिद्धियाँ प्राप्त रहती हैं। ये कभी बहुत छोटा रूप बना लेते हैं, कभी ये पर्याप्त भार से युक्त हो जाते हैं तथा कभी बिल्कुल ही हल्के हो जाते हैं।[5]

10. **भूत**—ये कल्याणकारी होते हैं तथा अपने कल्याण के लिये प्रयत्न भी करते रहते हैं। इन्हें भूति (ऐश्वर्य, विभूति, कल्याण) की आकांक्षा एवं प्राप्ति होती है।

नराशंस का मनुष्यत्व—'नराशंस' शब्द देवजातियों में न होकर मनुष्य जाति में 'प्रशंसित' (Praised) के लिये है। 'नर' शब्द का अर्थ मनुष्य

---

1. 'धरतीति धरो विद्याया धरो विद्याधरः।'
—'रसाला', अमर. 1/12

2. 'अद्म्यः सरन्तीत्यप्सरसः'
—'रसाला', अमर० स्वर्ग—वर्ग 11

3. 'यक्ष्यते पूज्यते यक्षः' रक्षन्त्येभ्यो रक्षांसि, गन्धं सौरभमर्वतीति गन्धर्वः।'
—'रसाला' अमर०, स्वर्ग, 11 वाँ श्लोक'

4. 'कुत्सिता नराः किन्नराः।'
—'रसाला', अमर० स्वर्ग, 11 वाँ श्लोक

5. 'पिशितमश्नातीति पिशाचः गूहति निधिं रक्षतीति गुह्यक', सिद्धिरस्यास्तीति सिद्धः।'
—'रसाला', अमर., स्वर्ग., श्लोक 11

होता है, क्योंकि 'नर' शब्द मनुष्य के पर्यायवाची शब्दों में एक है।[2]

नराशंस की व्यापकता

'नराशंस' के विषय में लौकिक संस्कृत ग्रन्थों में कुछ भी सामग्री उपलब्ध नहीं होती। वैदिक ग्रन्थों में ही 'नराशंस' के विषय में स्थान–स्थान पर मन्त्र आये हैं। 'नराशंस' के विषय में संहिता ग्रंथों में पर्याप्त मन्त्र उपलब्ध हैं। अथर्ववेद संहिता के बीसवें काण्ड के एक सौ सत्ताइसवें सूक्त में 'नराशंस' की प्रशस्ति पर चौदह मन्त्र निर्दिष्ट हैं। ऋग्वेद सभी वेदों में प्राचीनतम वेद है। ऋग्वेद में भी अनेक स्थानों पर 'नराशंस' विषयक मन्त्र है। ऋग्वेद के अन्तर्गत 'नराशंस' शब्द से प्रारम्भ होने वाले मन्त्रों की संख्या आठ है। ऋग्वेद प्रथम मण्डल, तेरहवें सूक्त, तीसरे मन्त्र और अठारहवें सूक्त, नवें मन्त्र तथा एक सौ छः सूक्त चौथे मन्त्र में 'नराशंस' का वर्णन आया है। ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के तीसरे सूक्त, दूसरे मन्त्र, पाँचवें मण्डल के पाँचवें सूक्त, दूसरे मन्त्र, सातवें मण्डल के दूसरे सूक्त, दूसरे मन्त्र, दसवें चौसठवें सूक्त, तीसरे मन्त्र और एक सौ बयालिसवें सूक्त, दूसरे मन्त्र में भी 'नराशंस' विषयक वर्णन आये हैं। सामवेद संहिता के तेरह सौ उन्चासवें मन्त्र में तथा वाजसनेयी संहिता के उन्तीसवें अध्याय के सत्ताइसवें मन्त्र में भी 'नराशंस' विषयक वर्णन उपलब्ध होता है। 'नराशंस विषयक वर्णन तैत्तिरीय आरण्यक (3/6/3/1) में भी मिलता है। शतपथ ब्राह्मण के प्रथम काण्ड के अन्तर्गत दर्शपौर्णमासेष्टि के अनुष्ठान के अवसर पर पंच प्रयाजों में 'नराशंसप्रयाजयाग' का भी उल्लेख है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है। 'नराशंस' केवल एक वेद तक सीमित नहीं, अपितु ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में भी व्याप्त है।

नराशंस का काल निर्धारण

किसी व्यक्ति विशेष को अधिकृत करके जब किसी ग्रंथ में उसका वर्णन किया जाता है, तब वह व्यक्ति विशेष ग्रंथ रचना के पूर्वकाल में रहता है, अन्यथा ग्रंथ में व्यक्ति विशेष का वर्णन आने की सम्भावना नहीं, यदि

---

2. 'मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः।
स्युः पुमांसः पंचजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः।।'
—अमरकोश, मनुष्य वर्ग, श्लोक 1

उपर्युक्त सिद्धान्त से कोई विद्वान यह निष्कर्ष निकाले कि नराशंस का स्थिति काल वेदों के अवतरण के भी पूर्व था तो यह निष्कर्ष अथर्ववेद के बीसवें काण्ड के अन्तर्गत एक सौ सत्ताइसवें सूक्त के प्रथम मन्त्र से ही अवरुद्ध हो जाता है, कि नराशंस वेदावतरण के पूर्व नहीं, अपितु वेदावतरण के बाद की स्थिति में स्तुत्य होता है।[1] ब्रह्म वाक्य में कहा गया है कि हे लोगो सुनो—नराशंस की प्रशंसा की जायगी। उपर्युक्त ब्रह्म वाक्त अथर्ववेद का है, और अथर्ववेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद से बहुत बाद का वेद है, अतः अथर्ववेद के काल के बाद तो 'नराशंस' की उत्पत्ति का होना निश्चित हुआ। 'नराशंस' के वाहन के रूप में ऊँट का प्रयोग उल्लिखित है,[2] अतः नराशंस की उत्पत्ति का होना उस समय निश्चित है, जब ऊँटों का सवारी के रूप में प्रयोग हो।

स्थान निर्धारण—नराशंस के स्थान—निर्धारण करने के विषय में न तो बाह्य प्रमाण उपलब्ध होते हैं और न तो कोई अन्तरङ्गप्रमाण। स्थान—निर्धारण के बिना नराशंस के उत्पत्ति—स्थान का ज्ञान भी असम्भव है, इसलिए नराशंस के स्थान के विषय में कुछ न कुछ विचार प्रस्तुत करना आवश्यक ही है। जब नराशंस का स्थान—निर्णय किया जा रहा है। नराशंस सवारी के रूप में ऊँट का प्रयोग करेगा। कोई भी व्यक्ति सिद्धान्त रूप में जिस देश, काल या वातावरण में जन्म लेता है, उस देश की भाषा, वेशभूषा तथा सवारी का प्रयोग भी करता है। ऊँट की सवारी करने का तात्पर्य यह है, कि नराशंस जिस स्थान में पैदा होगा, वहाँ ऊँटों की प्रचुरता रहेगी। ऊँटों की प्रचुरता प्रायः उन्हीं स्थानों में होती है, जो रेगिस्तानी भू—भाग होते हैं। इस प्रकार स्थान—निर्णय का निरूपण करते हुए हम इस तथ्य पर पहुँचते हैं, कि नराशंस रेगिस्तानी भू—भाग में उत्पन्न होगा, जहाँ ऊँट प्रचुर मात्रा में उपयोगी हों।

●

---

1. 'इदंजना उपश्रुत नराशंसः स्तविष्यते।'
—अथर्ववेद संहिता 20/127/1

2. 'उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो.....।'
—अथर्व. 20/127/2

द्वितीय अध्याय

नराशंस के गुण और महत्त्व

वेदों में जितने भी मन्त्र आए हैं, सभी प्रायः परमेश्वर के गुणों पर प्रकाश डालते हैं। कुछ ही मन्त्र ऐसे हैं, जो अन्य विषयों से सम्बन्धित हैं। नराशंस की महत्ता इसी बात से स्पष्ट हो जाती है कि उसकी स्तुति की जायेगी। ऋग्वेद काल में भी यज्ञों को करते समय नराशंस का आह्वान किया जाता रहा है। आह्वान किए जाते समय उसे 'प्रिय' (beloved) शब्द से युक्त किया गया है। नराशंस की वाणी की मधुरता को लक्षित करके उसे ऋग्वेद में साक्षात् 'मधुजिह्व' भी कहा गया है।[1]

परोक्ष ज्ञान—मधुजिह्व अर्थात् मधुरभाषिता के अतिरिक्त नराशंस का सर्वाधिक विशेष गुण परोक्ष ज्ञान बताया गया है। परोक्ष ज्ञान से युक्त व्यक्ति को कवि कहा जाता है। कवि की प्रतिमा विलक्षण होती है। जहाँ पर सूर्य और चन्द्र की तथा देवताओं की भी पहुँच नहीं होती, वहाँ तक जो पहुँच जाता है और आध्यात्मिक जगत् का जो सम्राट् होता है, उसे कवि कहा जाता है। 'क' का अर्थ ईश्वर होता है। 'क' अर्थात् ईश्वर से जिसका सम्बन्ध होता है, ईश्वर को जो विशेष रूप से जानता है, उसे भी कवि कहा जाता है। शब्द–कोशों में कवि के अर्थ बहुत से दिए गए हैं—प्रतिभावान्, चतुर, बुद्धिमान, विचारयुक्त, प्रशंसनीय और सन्त आदि[2]। ऋग्वेद में नराशंस को कवि बताया गया है।[3] 'कवि' का एक अर्थ 'कविता करने वाला' भी होता है।

सुन्दर कान्ति—नराशंस के विषय में उसके महत्व का प्रतिपादक 'स्वर्चि' शब्द ऋग्वेद में प्रयुक्त हुआ है।[4] स्वर्चि शब्द का विच्छेद है—'शोभना

1. 'नराशंसमिहप्रियमस्मिन्यज्ञ उप ह्वये। मधुजिह्वं हविष्कृतम्।।'
—ऋग्वेदसंहिता

2. 'कविः.....Inteligent, clever, wise, thinking, thoughtful, praiseworthy—विः A wise man, a Thinker, a sage.
—The Student's Sanskrit-English Dictionary.
—V. S. Apte, Page 140

3. 'नराशंसः सप्तदातीमं यज्ञमद्रुह्यः। कविर्हि मधुहस्त्यः।।'
—ऋग्वेद संहिता 5।51।11

4. 'नराशंसः प्रतिधामान्यञ्जन् तिस्रो दिवः प्रति मह्ना स्वर्चिः।।'
—ऋग्वेद संहिता 2।31।11

अर्चिर्यस्य यः' अर्थात् सुन्दर दीप्ति या कान्ति से युक्त। 'अर्चि' शब्द का अर्थ होता है—दीप्ति[1], और 'सु' का अर्थ होता है—सुन्दर। 'स्वर्चि' शब्द का अभिप्राय यह है, कि इतने सुन्दर स्वरूप का व्यक्ति, जिसके आनन से रश्मि सी भासित हो रही हो। ऋग्वेद के जिस मन्त्र में नराशंस को स्वर्चि कहा गया है, उसी स्थान में उसके विषय में यह भी स्पष्ट रूप से बता दिया गया है, कि वह अपने महत्व से घर—घर को प्रकाशित करेगा।[2] अर्थात् ऐसा कोई घर नहीं होगा, जहाँ नराशंस की प्रशंसा न की जाय। ऐसी स्थिति में नराशंस नाम का अर्थ भी घटित हो जाएगा, क्योंकि 'नराशंस' शब्द का अर्थ ही यह होता है—ऐसा मनुष्य जो प्रशंसित हो। नराशंस के विषय में जो 'प्रतिधामान्यञ्जन्' आया है, उसमें 'अञ्जन्' शब्द प्रकाशन अर्थ वाली 'अञ्ज' धातु में 'शतृ' प्रत्यय के संयोग से बना है। 'प्रतिधामानि' का अर्थ स्पष्ट ही है—'प्रत्येक घरों को'। यदि कोई यह शङ्का करे, कि 'अग्नि' शब्द भी तो 'अन' धातु से बना है, जो प्रकाशक होने के साथ ही साथ जला देने वाला भी है, तो 'नराशंस' के विषय में 'अञ्ज' धातु से निष्पन्न 'अञ्जन्' शब्द का प्रयोग करना यह स्पष्ट करता है, कि नराशंस प्रत्येक घरों को जलाकर भस्म कर देगा तो यह शङ्का अनुपयुक्त है, क्योंकि जो शब्द जिस स्थल में प्रयुक्त होता है, उस स्थल के अनुरूप ही अपने अर्थ को भी अभिव्यक्त करता है। यदि शब्दों के प्रयोग के विषय में स्थल का औचित्य न देखा जाय, तो महान् अनर्थ की प्राप्ति होगी। जैसे—भोजन करते समय कोई कहे 'सैन्धव लताओं' तो स्थल के अनुरूप 'सैन्धव' के 'नमक' अर्थ को ही ग्रहण करना चाहिए, न कि 'घोड़े' अर्थ को और यात्रा करते समय 'सैन्धव' शब्द से 'घोड़े अर्थ को समझना चाहिए, न कि 'नमक' अर्थ को। प्रकाश अन्धकार को दूर करने के लिए होता है। आध्यात्मिक रूप में 'प्रकाश' शब्द 'ज्ञान' के लिए और 'अन्धकार' शब्द 'अज्ञान' के लिए प्रयुक्त होते हैं। नराशंस के विषय में उसकी आध्यात्मिकता को 'कवि' शब्द से सूचित किया गया है, इसलिए प्रकाश का तात्पर्य नराशंस के विषय में ज्ञान से है। 'घर—घर को प्रकाशित

---

1. (ज्वालाभासोर्नपुंस्य) र्चिर्ज्योति (र्भद्योतदृष्टिषु)।

—अमरकोश 3123911

2. 'नराशंसः प्रतिधामान्यञ्जन् तिस्रो दिवः प्रति मह्ना स्वर्चिः।'

—ऋग्वेद संहिता 2131211

करने' का तात्पर्य घर—घर में ज्ञान को प्रसारित करने से है। इस प्रकार नरशंस को ऋग्वेद में 'ज्ञान का प्रसारक' कहा गया है।

पापों का निवारक—नराशंस को 'सम्पूर्ण पापों से लोगों को अलग करने वाला' बताया गया है।[1] जिसके अन्दर जो गुण होता है, उससे उसी गुण को अन्यों को प्रदान करने के लिए कहा जाता है। मन्त्रों का साक्षात्कार करने वाले कुत्स आङ्गिरस ऋषि नराशंस से यह अनुनय करते हैं, कि वह आकर सम्पूर्ण लोगों को पापों से अलग करें। उक्त मन्त्र से यह सूचित होता है, कि पुरातन काल के ऋषियों के अन्तःकरण में नराशंस के प्रति कितना अनुराग था, कि वे इस बात की अपने अन्दर तीव्र अभिलाषा करते थे कि नराशंस आकर लोगों को पापों से निवारित करे। यदि कोई उक्त मन्त्र में यह शङ्का करे, कि 'विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन' का अर्थ तो होता है कि 'सम्पूर्ण पापों से हमें फिर पार उतारो' लोगों को पापों से अलग करने की बात को क्यों अर्थ के रूप में व्यक्त किया जा रहा है', तो इसका समाधान यह है कि वेदों में जो मन्त्र हैं, वे लोगों द्वारा किए जाने वाले प्रार्थना मन्त्र या पाठ—मन्त्र हैं, न कि ऋषियों द्वारा स्वयं अपने कल्याण के लिए बनाए गए मन्त्र क्योंकि वेद अपौरुषेय हैं और वेदों को कोई बना नहीं सकता, किन्तु वेद लोगों का कल्याण करने के लिए ईश्वर द्वारा ऋषियों के माध्यम से अभिव्यक्त किए गए हैं, इसलिए 'नो अंहसो निष्पिपर्तन' का अर्थ लोगों को पापों से निवारण करने को सूचित करता है।

नराशंस प्रयाजयाग—सन्तान और पशु आदि की सम्पत्ति के प्रपित्सु लोगों द्वारा तनूनपात्प्रयाज के स्थान में नराशंस का प्रयाजयाग करना चाहिए।[2] नराशंसप्रयाज का अर्थ है—उसके लिए प्रयाजयाग जो लोगों में प्रशंसित है।[3] नराशंस प्रयाजयाग में आज्य अग्नि में 'ये यजामहे' नराशंसो अग्न आज्य वेतु 3 वो 3 षट' मन्त्र पढ़कर छोड़ा जाता है।[4]

---

1. 'नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे। रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन।।''—
ऋग्वेद 1/106/4
2. 'प्रजापशुकामानां तनूनपात्स्थाने नराशं सप्रयाजोयज्ञः।'
—कातीयेष्टिदीपक, पृ० 55
3. दर्शपूर्णमासेष्टि का विस्तृत अध्ययन (शोध प्रबन्ध), पृ० 161
4. दर्शपूर्णमासेष्टि का विस्तृत अध्ययन (शोध प्रबन्ध), पृ० 161

उपर्युक्त मन्त्र में नराशंस को लोगों में प्रशंसित, कीर्ति की ज्योति से युक्त तथा आज्य का प्रेमी कहा गया है।

नराशंस का स्वरूप—कोई मनुष्य जब प्रशंसित होता है, तो उसकी प्रशंसा का कारण उस व्यक्ति में निहित गुणों का समुदाय है, जिसके कारण वह प्रशंसा का पात्र बनता है। दुष्टों की प्रशंसा उनको प्रसन्न करके कुछ स्वार्थ–साधन के लिए भले ही कोई कर दे, परन्तु स्वाभाविक रूप में दुष्ट व्यक्ति प्रशंसा के पात्र न होकर निन्दा के ही पात्र होते हैं। यह अवश्य ही कहा जा सकता है कि 'दुष्टों की दुष्टता की प्रशंसा जहाँ तक की जाये, वह कम ही है', उपर्युक्त वाक्य में 'प्रशंसा' शब्द भी निन्दा के अर्थ में अभिव्यक्त हुआ है। पुरुष को प्रशंसित करने के लिए आठ गुण होते हैं जो क्रमशः प्रज्ञा, कुलीनता, इन्द्रिय दमन, श्रुति ज्ञान, पराक्रम, अबहुभाषिता, यथाशक्ति दान और कृतज्ञता है। लोगों के अन्तःकरण में वास्तव में वही स्थान प्राप्त कर सकता है, जो जन–विद्वेषी न हो, धर्म का अनुरागी हो, प्रशंसनीय कर्म करे, निन्दित कर्मों को न करे, नास्तिक न हो और क्रोध, हर्ष, दर्प, लज्जा, जड़ता, एवं अपने को बड़ा समझने की भावना जिसके ऊपर अपना अधिकार न कर सके। नराशंस को पहचानने के लिए अथर्ववेद में कुछ निश्चित बातें बताई गई हैं, जो प्रस्तुत हैं।

1. **सवारी के रूप में ऊँट का प्रयोग करने वाला**—अथर्ववेद में नराशंस के होने की भविष्यवाणी के अनन्तर उसके द्वारा सवारी के रूप में ऊँटों के उपयोग की बात अभिव्यक्त की गई है।[1]

2. **बारह पत्नियों वाला**—नराशंस के पास बारह पत्नियाँ होंगी, इस बात की पुष्टि भी अथर्ववेद के उसी मन्त्र से होती है, जिस मन्त्र में उसके द्वारा सवारी के रूप में ऊँट के प्रयोग करने की बात का उल्लेख है।[2]

3. **सौ निष्कों से युक्त**—निष्क का अर्थ होता है—स्वर्ण मुद्रा। स्वर्ण मुद्राएँ आपत्ति काल में मनुष्य को बहुत सहयोग देती हैं। नराशंस को ईश्वर

---

1. 'उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो.... —अथर्ववेद 20/127/2
2. '.....वधूमन्तो द्विर्दश' —अथर्ववेद 20/127/2
3. 'एष इषाय मामहे शतं निष्कान् दशस्रजः।
वीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम्।।'
—अथर्ववेद 20/127/3

की ओर से सौ निष्क प्रदान किए जाने का उल्लेख है।[3]

4. **दस मालाओं वाला**—मालाएँ गले का हार रहती हैं। 'गले का हार' का अर्थ अत्यधिक प्रिय के लिए प्रयुक्त किया जाता है। नराशंस के लिए दस मालाएँ ईश्वर की प्रेरणा से प्रदान किए जाने का उल्लेख अथर्ववेद के बीसवें काण्ड के एक सौ सत्ताइसवें सूक्त, तीसरे मन्त्र में हुआ है।

5. **तीन सौ अर्वन् से युक्त**—नराशंस को तीन सौ अर्वन् की प्राप्ति होगी, इस बात का उल्लेख भी अथर्ववेद के उपर्युक्त मन्त्र में हुआ है।

6. **दस हजार गो से युक्त**—ईश्वर की ओर से नराशंस को दस हजार गो प्रदान किए जाएँगे।

अब हम अगले अध्याय में यह प्रमाणित करेंगे कि नराशंस की उत्पत्ति हुई या नहीं। यदि उत्पत्ति हुई, तो नरशंस कौन थे।

तृतीय अध्याय

नराशंस की सिद्धि

1. **नामगत सिद्धि**—'नराशंस' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ प्रथम अध्याय में बतलाया जा चुका है। अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट है, कि 'नराशंस' शब्द व्युत्पत्तिजन्य अर्थ से निर्दिष्ट किसी व्यक्ति विशेष के लिए आया है जो यह स्पष्ट करता है कि वह उत्पन्न होने वाला व्यक्ति, जिसके विषय में वेदों में भविष्यवाणी की गई है, नर = मनुष्य होगा और साथ ही साथ आशंस = प्रशंसित भी होगा। उपर्युक्त कारण से हमें ऐसे व्यक्ति को प्रमाणित करना है, जो मनुष्य भी हो और वह प्रशंसित भी हो। 'मुहम्मद' शब्द 'हम्द्' = 'प्रशंसा करना', धातु से बना हुआ है, जिसका अर्थ 'प्रशंसित' होता है। मुहम्मद साहब मनुष्य भी थे, अतः उनमें नरत्व और आशंसत्व दोनों गुण घटित हो जाते हैं। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि 'नराशंस' शब्द अरबी में 'मोहम्मद' शब्द से अभिहित व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है। जिस प्रकार 'जल' शब्द जिस विशेष पदार्थ का बोध कराता है और वाटर (water) तथा 'आब' व 'वास्सेर' (wasser) शब्द भी उसी पदार्थ का बोध कराते हैं, परन्तु अन्तर केवल यही है कि 'जल' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है और 'वाटर' अंग्रेजी भाषा का, 'आब' फारसी भाषा का तथा 'वास्सेर' जर्मन भाषा का शब्द है, जो एक ही पदार्थ का बोध कराते हैं, उसी प्रकार 'नराशंस' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है और 'मोहम्मद' अरबी भाषा का शब्द है, जो एक ही व्यक्ति विशेष के बोधक हैं। अब देखना यह है कि क्या नराशंस के विषय में जो बातें कही गई हैं, वे मोहम्मद साहब पर घटित होती हैं, अथवा नहीं।

2. **कालगत सिद्धि**—नराशंस की उत्पत्ति का होना उस समय बताया गया है, जबकि ऊँटों का सवारी के रूप में उपयोग हो। मोहम्मद साहब भी उसी समय उत्पन्न हुए थे, जबकि ऊँटों का सवारी के रूप में प्रचुर मात्रा में उपयोग हो रहा था। स्वयं मोहम्मद साहब ऊँट की सवारी के अत्यधिक प्रेमी थे। मोहम्मद साहब ऊँट में चढ़कर मदीना पहुँचे थे।[1]

---

1. "Around the camels of Mahomet and his immediate followers, rode the chief men of the city, clad in their best raiment and in glittering armour." —Life of Mahomet, by Sir William Muir, Abridge Edition, Page 180.

3. **स्थानगत साम्य**—नराशंस का जन्म—स्थान ऐसे स्थल में बताया गया है, जो रेगिस्तानी भू—भाग हो। मोहम्मद साहब मक्का में उत्पन्न हुए थे।[1] मक्का ऐसा स्थान है, जो रेगिस्तानी भू—भाग है।

4. **गुणगत साम्य**—(क) नराशंस के लिए ऋग्वेद में प्रिय शब्द का प्रयोग हुआ है। मोहम्मद साहब भी सभी को प्रिय थे।[2]

(ख) नराशंस को परोक्ष ज्ञाता भी बताया गया है। मुहम्मद साहब को भी परोक्ष की बातों का ज्ञान होता था। इस विषय में एक ऐतिहासिक प्रमाण इनायत अहमद की 'अलकलामुल्मुबीन' नामक पुस्तक में है, कि रोमियों और ईरानियों के युद्ध में रोमियों के पराजित हो जाने की घटना अपनी परोक्ष—दर्शिता से मुहम्मद साहब ने अपने मित्रों से बताई थी तथा पुनः एक फरिश्ते से नव वर्ष के अन्दर ही रोमियों को होने वाली विषय का समाचार जानकर उसे बतलाया था। इस भविष्यवाणी के बाद नव वर्ष के अन्दर ही नैनवा की लड़ाई में रोमियों की विजय 627 ई. में हुई थी। इसी विषय से सम्बन्धित 'सूरे रूम' नाम कुरआन की 30वीं सूरत उतरी है।[3] इसी बात को कुरआन की सूरःरूम की दूसरी से लेकर चौथी आयत तक में इस प्रकार कहा गया है कि रोमियों की जाति पराजित हो गई। इस अरब की भूमि के निकट ही वे लोग अपने पराजित हो जाने के बाद भी वास्तव में नव वर्षो के अन्दर—अन्दर विजयी होंगे। ईश्वर के हाथ में सारा कृत्य पूर्ववर्ती और परवर्ती दोनों है।[4] यह मुहम्मद साहब की परोक्ष—दर्शिता का स्वतः प्रमाण है।

(ग) नराशंस को वेदों में 'कवि' = कविता करने वाला भी बताया गया है, और कवि = ईश्वर को जानने वाला भी। मोहम्मद साहब को भी 'शायर' कहा जाता था। 'शायर' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ

---

1. "He was the posthumous son of Abdulla of the Hashimite sept of Mecca."
—An Encyclopedia of world History, by W.L. Langer, Page 184.

2. Those who saw him, were suddenly filled with reverence, those who came near him loved him, they who described him, would say. I have never seen him like either before of after."
—Speeches of Mohammad—Stanley Lane, Poole, Macmillan and Co., Page XXIX 1882.

3. कल्कि अवतार और मोहम्मद साहब पृष्ठ 43

4. 'गुलि बतिर्रुमुधी अदनल् अर्जि व हुम् मिम्बादि गलबि हिम् सयग लिबून फी बिर्रए सिनीन लिल्लाहिल् अम्रु मिन्कब्लु व मिन् बादु।'
—कुरआन सूरःरूम, आयत 2—4

होता है—ज्ञाता।' ईश्वर को जानने वाले मुहम्मद साहब थे, क्योंकि ये ऋषि थे। ईश्वर का सन्देशवाहक होने के ही कारण तो इन्हें 'नबी' कहा जाता था। 'नबी' शब्द अरबी का शब्द है, जो नबा धातु से बना है। 'नबा' का अर्थ होता है—सन्देश, और उस धातु से निष्पन्न शब्द 'नबी' का अर्थ होता है—सन्देश देने वाला।

(घ) ऋग्वेद में नराशंस को अधिक सुन्दर स्वरूप वाला और घर–घर में ज्ञान की ज्योति जलाने वाला बताया गया है। मोहम्मद साहब भी अत्यधिक सुन्दर थे। उनकी सुन्दरता को देखकर लोग उनकी ओर खिंच जाते थे। उनकी आकर्षक शक्ति के विषय में रेवरेंट बासवर्थ स्मिथ ने 'मोहम्मद एण्ड मोहामेडनिज्म' नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ में उल्लेख किया है, कि मोहम्मद साहब के विरोधी भी उनकी आकर्षण शक्ति तथा उनकी गरिमा से प्रभावित होकर उनका सम्मान करने को बाध्य हो जाते थे।[2] विरोधियों की अत्यधिक संख्या एवं प्रबलता के होने पर भी मोहम्मद साहब ने ज्ञान के प्रकाश को घर–घर में फैलाने का प्रयत्न किया। डा. ताराचन्द ने 'इन्फ़्लुएन्स आफ़ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर' नामक ग्रन्थ की भूमिका में लिखा है, कि मोहम्मद साहब के पास ईश्वरीय वाक्य आने लगा, और वह पृथ्वी पर ईश्वर के सन्देष्टा बन गए और अरब के लोगों के धार्मिक गुरु बन गए।[3]

(ड.) नराशंस को पापों से हटाने वाला भी कहा गया है। सामान्यतया कुछ लोग अधर्म को भी धर्म समझ कर उसका पालन करते हुए देखें जाते

1. 'व यकूलून अइन्ना ल तारिकू आलिहतिना लिशाइरिन् मजनून बल्जाअ बिल्कक़्क़ि व मद्दकल् मुर्सबीन' —कुरआन सूरः साफ़्फ़ात आयत 27–28

(और ये लोग कहते हैं क्या हम अपने– अपने देवताओं को एक शायर और पागल की वजह से छोड़ बैठें, नहीं–नहीं यह नबी तो एक सच्चा दीन लाए है और तमाम ही रसूलों को सच्चा बतातें हैं)

2. "The most noteworthy of his external characteristics were a sweet gravity and a quiet dignity, which drew involuntary respect, and which was the best, and often the only, protection he enjoyed from insult."

—Mohammed and mohammedanism,
by R. Bosworth Smith, Page 111.

3. 'Mohammad became the recipient of God's command, his messenger on earth, and his apostle to the people of Arabis.'

—Influence of Islam on Indian culture,
by Dr. Tarachand, Preface.

हैं। ऐसे अधार्मिक लोगों को नराशंस उनके द्वारा किए जाते हुए पापों से रोकेगा, तथा भविष्य में पाप न करने के लिए प्रेरित करेगा। जो लोग पाप किए रहते हैं, यदि वे उसकी क्षमा ईश्वर से नहीं मांगते हैं, तो भविष्य में पुनः पाप करने की आशङ्का रहती हैं। मोहम्मद साहब ने केवल लोगों को पापों से दूर रहने के लिए ही नहीं प्रेरित किया, अपितु ईश्वर से क्षमा याचना करने के लिए भी उत्साहित किया, ताकि लोगों को अपने किए हुए पापों के कारण नरकगामी न होना पड़े। यह मोहम्मद साहब की शिक्षा का ही प्रभाव है, कि लोगों में जो मोहम्मद साहब के अनुयायी हैं, आज भी शराब का पीना, ब्याज लेना आदि निषिद्ध है। दूसरों की सम्पत्ति का लोभ न करने का भी उपदेश मोहम्मद साहब ने दिया है। कुरआन मे धन आदि को महत्त्व न देकर आध्यात्मिकता को महत्व दिया गया है।[1]

5. **पत्नीगत साम्य**—अथर्ववेद में नराशंस को बारह पत्नियों वाला बताया गया है। मोहम्मद साहब के भी बारह पत्नियाँ थीं। उनकी बारह पत्नियों में पहली का नाम खदीजा था। खदीजा खुवैलिद की पुत्री थी। मुहम्मद साहब की दूसरी पत्नी का नाम 'सौदः' था, जो 'जमअः' की पुत्री थीं। तीसरी पत्नी का नाम 'आयशः' था जो अबूबक्र की पुत्री थीं। चौथी पत्नी 'हफ़्शः' थी, जो उमर की पुत्री थीं। पाँचवीं पत्नी का नाम 'जैनब' था, जो 'खज़ीमः' की पुत्री थीं। छठीं पत्नी का नाम 'उम्मे सलमः' था जो 'अबीउमय्यः' की पुत्री थीं। सातवीं पत्नी का नाम भी 'जैनव' था, जो 'हजश' की पुत्री थी। आठवीं पत्नी का 'जुबैरियः' नाम था, जो 'हारिस' की पुत्री थीं। नवीं पत्नी का नाम 'रैहानः' था, जो 'यज़ीद' की लड़की थीं। दसवीं पत्नी का नाम 'उम्मे हबीबः' था, जो 'अबीसुफ़ियान' की पुत्री थीं। ग्यारहवीं पत्नी का नाम 'सफ़ियः' था, जो 'हैबी' की पुत्री थीं। 'मैमूनः' मोहम्मद साहब की बारहवीं पत्नी थी, जो 'हारिस' की पुत्री थीं। इस प्रकार नराशंस के विषय में कही गई बात, जो उनकी पत्नियों के विषय में थी, मोहम्मद साहब के ऊपर पूर्ण–रूपेण घटित हुई। किसी भी प्रसिद्ध व्यक्ति, जो धार्मिक प्रकृति का रहा हो, के बारह पत्नियाँ नहीं थीं। मोहम्मद साहब

---

1. 'फ़मा ऊतीतुम्मिन्शैइन्फ़मताउल्हयातिद्दुनिया'

—कुरआन 42/36

(जो कुछ माल तुंम लोगों को दिया गया है, वह सिर्फ दुनिया की चन्द रोज़ की जिन्दगी का सामान है।)

ही ऐसे व्यक्ति हुए थे, जिनकी पत्नियों की संख्या बारह थी। इस प्रकार नराशंस के विषय में कहीं गई बात मोहम्मद साहब के ही ऊपर घटित होती है।

अन्य बातों में साम्य—अवर्थवेद में अन्योक्ति अलङ्कार के माध्यम से नराशंस के विषय में कुछ बातें बताई गई हैं, जिनकी तुलना मोहम्मद साहब से दी जा रही है। नराशंस के लिए दस हजार गो ईश्वर द्वारा प्रदान किए जाने का उल्लेख अवर्थवेद में हैं। 'गो' अलङ्कारिक शब्द है। गो शब्द सामान्यतया अच्छे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है। उदाहरणस्वरूप 'नरपुङ्गव' शब्द 'मनुष्यों में अच्छे' व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है।' पुङ्गव' शब्द का विग्रह है 'पुंक्षु गौः' अर्थात् मनुष्यों में गौ अर्थात् श्रेष्ठ या अच्छा। मोहम्मद साहब द्वारा दी जाने वाली शिक्षाओं के पालनकर्त्ता उसके जीवन काल के अन्तिम भाग में दस हजार थे। वे मोहम्मद साहब के अनन्य सहयोगी थे। मक्का को जीतने के उद्देश्य से जब मुहम्मद साहब मक्का की ओर मदीने से प्रस्थान कर रहे थे, तो उनके साथ रहने वाले सहायकों की संख्या दस हजार थी।[1] मुहम्मद साहब के दस हजार शिष्य जब मक्का में पहुँचे, तो न तो वहाँ किसी प्रकार का युद्ध हुआ और न तो मुहम्मद साहब के किसी शिष्य ने किसी को कष्ट ही दिया, इसी कारण से उन दस हजार शिष्यों को 'गौ' कहा गया।[2]

नराशंस के विषय में यह भी वेदों में उल्लेख है, कि नराशंस को तीन सौ 'अर्वन्' की प्राप्ति होगी। 'अर्वन्' भी अलङ्कारिक शब्द है। 'अर्वन्' का अर्थ घोड़ा होता है। घोड़ा बहुत ही तेज गमन करने वाला तथा युद्ध में अत्यधिक उपयोगी होता है। तीन सौ अर्वन् का तात्पर्य यह है कि तीन सौ से अधिक और चार सौ से कम संख्या में अर्वन् का होना। जिस प्रकार 'सत्पतशी' शब्द का अर्थ होता है ऐसा ग्रन्थ, जिसमें सात सौ या उससे

---

1. "But the final keystone was set in the 8th year of the flight A. D. 630, when a body of the koreysh broke the truce by attacking an ally of the Muslims, and Mohammad forthwith marched upon Mecca with ten thousand men."

—Speeches & table talk on the Prophet Mohammed,
by—Stanley Lane poole, Page-XLVL
Macmillan & Co. (London) 1882

2. Speeches and Table Talk of Prophet Mohammad.
—Page XIVI to XvLII.

अधिक, परन्तु आठ सौ से कम पद्यों का संग्रह हो, उसी प्रकार 'तीन सौ अर्वन्' का अर्थ तीन सौ या उससे अधिक, परन्तु चार सौ से कम संख्या में अर्वन् का होना निश्चित है। 'अर्वन्' शब्द वीर योद्धाओं के लिए प्रयुक्त शब्द है। मोहम्मद साहब के सहयोगियों की संख्या तीन सौ थी।'

अथर्ववेद में नराशंस के लिए दस स्रक् प्रदान किए जाने का उल्लेख है। दस मालाएँ भी अन्योक्ति के माध्यम से दस ऐसे प्रिय व्यक्तियों की ओर संकेत करती हैं, जो नराशंस के गले के हार के समान हों और नराशंस उन्हें बहुत चाहता हो। मोहम्मद साहब के भी दस ऐसे व्यक्ति थे, जो उन पर अपने प्राणों को भी समर्पित करने में तुले थे। मुहम्मद साहब के चारों ओर वे दसों व्यक्ति सदैव रहते थे, इसलिए वे मोहम्मद साहब के गले के हार थे। उन दसों व्यक्तियों के नाम ये हैं—अबूबक्र, उमर, उस्मान, अली, तल्हा, जुबैर, अबू इसहाक़, अबुल आवर, अबू मोहम्मद अब्दुर्रहमान, अबू उबैदः।

1. **अबूबक्र**—ये उस्मान के पुत्र थे, और मोहम्मद साहब के पहले खलीफ़ा थे।

2. **उमर**—द्वितीय खलीफ़ा के रूप में हमारे समक्ष उमर का नाम आता है, जो ख़त्ताब के पुत्र थे।

3. **उस्मान**—अफ़्फ़ान के पुत्र उस्मान तीसरे खलीफ़ा थे।

4. **अली**—ये अबी तालिब के पुत्र थे और चौथे खलीफ़ा थे।

5. **तल्हा**—युद्ध में बड़े वीर थे। इनके पिता का नाम अब्दुल्लाह था।

6. **जुबैर**—इनके पिता का नाम अव्वाम था। ये भी बहुत बड़े योद्धा थे।

7. **अबू इसहाक़**—इनके पिता का नाम अबी वुक़्क़ास था। यह भी बहुत बड़े वीर थे।

8. **अबुल् आवर**—ये अब्दुर्रहमान के पुत्र थे।

---

1. 'A froce of seven hundred men had come out from Mecca convoy home and other caravan, and they encountered a large raiding party of three hundred. There was a fight the battle of Badr, and the Meccans got the worst of it.'

-The out line of History, Page 605 by
H. G. Wells, Garden Cky, Newyork, 1949

9. **अबू मोहमद अब्दुर्रहमान**—इनके पिता का नाम 'औफ़' था।

10. **अबू उवैद**—इनके पिता का नाम अब्दुल्लाह था।

उपर्युक्त दसों व्यक्ति सभी युद्धों में मोहम्मद साहब की सहायता करते थे, एवं विरोधियों के प्रहारों से उनकी रक्षा करते थे। इस प्रकार दस की माला के रूप में ये दसों व्यक्ति 'अशरः—मुवश्शरः' कहे जाते थे, इन्हें मोहम्मद साहब स्वर्गीय कहा करते थे।

अथर्ववेद में नराशंस के लिए सौ निष्क ईश्वर द्वारा प्रदान किए जाने का उल्लेख है। निष्क स्वर्ण मुद्राओं को कहा जाता है। स्वर्ण—मुद्राएँ या निष्क शब्द उन श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त है, जो रत्नवत् महत्त्वशाली हों। ईश्वरीय धर्म के प्रचारकों को एवं मूल धर्म के सुरक्षकों को भी 'निष्क' शब्द से व्यवहृत किया जाता है। इसका कारण यह है, कि 'निष्क' बहुत ही मूल्यवान् होता है, और मूलधर्म के संरक्षक या गुरु द्वारा उपदेशित शिक्षाओं के संरक्षक का भी अत्यधिक महत्व होता है। मुहम्मद साहब जिन शिक्षाओं को लोगों के लिए प्रदान कराते थे, उनकी सुरक्षा का कार्य सौ व्यक्ति करते थे मुहम्मद साहब द्वारा दी जाने वाली शिक्षा की रक्षा भी करते थे, तथा अन्यों को भी इन शिक्षाओं से अवगत करते थे। ये असहाबि सुफ़्फः कहलाते थे।

इस प्रकार यह सिद्ध हो गया, कि वेदों में जिस नराशंस के होने की भविष्यवाणी की गई है, वह मुहम्मद साहब की हैं।

अध्याय 4

अभारतीय धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार नराशंस

पहले के तीन अध्यायों में वेदों के अनुसार नराशंस का स्वरूप प्रतिपादित किया गया है, अब अभारतीय धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार जिस ऋषि की ओर संकेत दिया गया है, उसका स्वरूप प्रस्तुत है—

मूसा की पाँचवीं पुस्तक के अनुसार—मूसा के ऊपर अवतरित 'व्यवस्था—विवरण' नामक पुस्तक में एक ऐसे ऋषि के होने की भविष्यवाणी की गई है जो मूसा के ही समान हो और उसके भाइयों के मध्य से हो। उस ऋषि के मुख में ईश्वरीय वचन के प्रवेश की बात सोने के अतिरिक्त ईश्वरीय आदेश को प्रसारित करने की बात का प्रतिष्ठापन भी मूसा की पुस्तक में हुआ है।[1]

उपर्युक्त भविष्यवाणी से होने वाले ऋषि के विषय में अधोलिखित बातें ज्ञात होती हैं—

1. मूसा के समान होना
2. मूसा के भाइयों के मध्य से होना
3. ईश्वरीय वचनों को प्राप्त करके उन्हें प्रसारित करना

1. **मूसा के समान कौन और क्यों?**—अब यह देखना है कि कौन ऐसा ऋषि हुआ जो मूसा के समान रहा हो। कुछ ईसाइयों के अनुसार उपर्युक्त भविष्यवाणी ईसा मसीह के लिए हुई थी परन्तु इस मत को स्वीकृति करने में अधोलिखित बाधाएँ हैं—

(क) मूसा ने धर्म प्रचार में व्याघात करने वाले मिस्र—सम्राट् फ़िरौन के पक्ष के एक मनुष्य को मार डाला था, इसका तात्पर्य यह है कि धर्म—व्याघातकारियों का दमन करना मूसा को अभीष्ट था। ईसा ने किसी भी विरोधी का दमन नहीं किया, अपितु यह विरोधियों द्वारा ही शूली में चढ़वा दिए गए।

---

1. 'I will raise them up a prophet from among their bretheren, like unto thee, and will put my words in his mouth, and he shall speak unto them all that I shall command him.' -Deuteronomy, 18-18.
The Books of Old and New Tefsament
Printed in Great Britain.

दूसरी बात यह है कि मूसा की जाति के लोग मूसा के ऋषि होने के पहले उनके जीवन काल में मूर्ति पूजा आदि में फँसे हुए थे। ईसा की जाति वाले ईसा के ऋषि होने के पहले उनके जीवन काल में मूर्ति–पूजा में नहीं फँसे थे।

तीसरी बात यह है कि अपने जीवन काल में मूसा ने जिस प्रकार अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त की, उस प्रकार ईसा ने स्व–जीवन काल में विरोधियों पर विजय नहीं पाई, अपितु वे विरोधियों द्वारा ही पराभूत हो गए।

चौथी बात यह है कि मूसा को अपने अनुयायियों द्वारा धोखा नहीं दिया गया, जबकि ईसा मसीह को उनके अनुयायियों में से एक ने धोखा दे दिया।

पाँचवी बात अन्तर की यह है कि मूसा माता–पिता से उत्पन्न हुए थे। स्त्री एवं सन्तान से युक्त थे। ईसा मसीह तो बिना पिता के ही उत्पन्न हुए थे[1] तथा उनके न तो कोई स्त्री थी और न तो कोई पुत्र ही था।

छठीं बात अन्तर की यह है कि मूसा अपने जाति वालों को और अपने अनुयायियों को फ़िरौन की परतन्त्रता से मुक्त कराकर, उन्हें लेकर अपना देश छोड़कर अन्य देश को चले गए, परन्तु ईसा मसीह अपने जीवन में रोमन सरकार से अपने अनुयायियों व जाति वालों को नहीं मुक्त करा सके।

सातवीं बात अन्तर की यह है, कि मूसा ने अपनी जाति के लोगों को एवं अनुयायियों को पैलेस्टाइन पर अधिकार करने के लिए लड़ने का आदेश दिया था, जिसके फलस्वरूप मूसा के अनुयायियों के पैलेस्टाइन पर अधिकार हो गया था, परन्तु ईसा मसीह ने अपने अनुयायियों को युद्ध करने के लिए कभी भी आदेश नहीं दिया।

आठवीं बात अन्तर की यह है कि मूसा को ईश्वरीय विधान प्राप्त हुआ था। मूसा के विधान का नाम 'लेविटिकस' है। ईसा मसीह ने किसी भी नई व्यवस्था को नहीं स्थापित किया, अपितु उन्होंने स्पष्ट कह दिया था

---

1. 'Now the birth of Jesus Christ was on this wise when as his mother Mary was espoused to Joseph, before they came together, she was found with child of the Holy Ghost.'

–New Testament, Saint Mathew, 1.18.

कि वह पुरातन विधान की पुष्टि के लिए आए थे और कोई नया विधान लेकर नहीं आये थे।[1]

नवीं बात अन्तर की यह है कि मूसा बनी इस्राइल के नेता थे तथा बहुत ही उत्कृष्ट जीवन बिताते थे। ईसा मसीह तो अपने जीवन काल में अपनी जाति के नेता नहीं थे। ईसा को केवल बारह मनुष्यों ने अपना धर्म–गुरु तथा धर्म–नेता माना था, जिनमें से एक ने इन्हें धोखा देकर गिरफ़्तार भी करा दिया था, इससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि ईसा मसीह के अनुयायी भी उनके प्रति श्रद्धा नहीं रखते थे।

दसवीं बात अन्तर की यह है कि मूसा दीर्घायु में मरे थे। ईसा मसीह तो अल्पायु में ही मर गए थे।

अन्तर की ग्यारहवीं बात यह है कि मूसा की मृत्यु के बाद उनसे पूर्व आदिष्ट खलीफ़ा ने पैलेस्टाइन और सीरिया पर विजय प्राप्त की थी परन्तु ईसा मसीह के विषय में ऐसी कोई भी बात नहीं घटित हुई। इस प्रकार ईसा मसीह उस ऋषि के पद पर खरे नहीं उतरते हैं जिसके लिए मूसा ने भविष्यवाणी की थी। ईसा मसीह मूसा के समान नहीं थे, यह बात उपर्युक्त ग्यारह तर्कों से पुष्ट हुई।

अब देखना यह है कि क्या मोहम्मद साहब मूसा के समान थे? धर्मप्रसार में विघ्न उपस्थित करने वालों का दमन करने में मोहम्मद साहब मूसा के ही समान थे।

दूसरी समता यह थी कि मोहम्मद साहब के जन्म लेने से पहले उनके देश के लोग मूर्ति–पूजा में बहुत ही बुरी तरह से उसी प्रकार फँसे थे, जिस प्रकार मूसा के जन्म लेने से पहले मूर्ति–पूजा का आधिपत्य था।

समता की तीसरी बात यह है कि जिस प्रकार मूसा ने अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त की, उसी प्रकार मोहम्मद साहब को भी अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त की।

समता की चौथी बात यह है कि जिस प्रकार मूसा को अनुयायियों द्वारा धोखा नहीं दिया गया, उसी प्रकार मोहम्मद साहब को भी उनके अनुयायियों द्वारा धोखा नहीं दिया गया।

---

1. "Think not that I am come to destroy the law or the prophets, I am not come to destroy but to fulful."

—New Testament, Saint Mathew, 5.17

समता की पाँचवीं बात यह है कि जिस प्रकार मूसा अपने माता–पिता से उत्पन्न हुए थे और सन्तान तथा स्त्री से युक्त थे, उसी प्रकार मोहम्मद साहब भी अपने माता–पिता से उत्पन्न हुए थे। मोहम्मद साहब ईसा मसीह की तरह कुमारी के गर्भ से नहीं उत्पन्न हुए थे। मोहम्मद साहब के भी पास मूसा की तरह पत्नी व सन्तान थीं। ईसा मसीह की तरह मोहम्मद साहब विवाह के बन्धन से मुक्त न थे।

समता की छठी बात यह है कि जिस प्रकार मूसा ने अपने जाति वालों को और अनुयायियों को फिरौन के कारागार से मुक्त किया था, उसी प्रकार मोहम्मद साहब ने भी अपने जाति वालों और अनुयायियों को विपक्षियों के पञ्जे से मुक्त किया था।

समता की सातवीं बात यह है कि जिस प्रकार मूसा की आज्ञा से उनके अनुयायियों ने उनकी मृत्यु के बाद पैलेस्टाइन और सीरिया को मूसा के खलीफ़ा के निर्देशन में विजित किया, उसी प्रकार मोहम्मद साहब की आज्ञा से पैलेस्टाइन और सीरिया को उनके अनुयायियों ने उनके खलीफ़ा उमर के निर्देशन में जीता।

आठवीं बात समता की यह है कि जिस प्रकार मूसा को ईश्वरीय विधान प्राप्त हुआ था, उसी प्रकार मोहम्मद साहब को भी एक नई व्यवस्था प्राप्त हुई थी।

नवीं बात साम्य की यह है कि मूसा जिस प्रकार अपने जाति के धार्मिक नेता थे, उसी प्रकार मोहम्मद साहब भी अपनी जाति के नेता थे। मोहम्मद साहब ईसा मसीह की तरह नेतृत्वहीन नहीं थे।

दसवीं बात समता की यह है कि मूसा दीर्घायु में मरे थे। ठीक मूसा की ही तरह मोहम्मद साहब भी दीर्घायु में ही मरे थे।

इस प्रकार मूसा की तुलना में मोहम्मद साहब ही उपयुक्त हैं, ईसा मसीह नहीं।

मूसा के भाईयों में से होना– मूसा के ऊपर अवतरित ईश्वर वाक्य के अनुसार वह ऋषि, जो अन्त में आने वाला था, मूसा के भाइयों में से होगा, इस बात की पुष्टि भी मूसा की पाँचवीं पुस्तक से होती है। मूसा के भाइयों में से होने का तात्पर्य यह है, कि मूसा की संतान–परम्परा से न होकर वह उसके बन्धु वर्गों की वंश–परम्परा में से होगा। बाइबिल के पुराने

नियम के अन्तर्गत मूसा की पाँचवीं पुस्तक ड्यूटेरानोमी के अनुसार यह सिद्ध होता है कि इस्राइल में मूसा की तरह पुनः कोई ऋषि नहीं होगा, जिसको ईश्वर के समक्ष अभिमुख होकर बात करने की सामर्थ्य प्राप्त हो।[1] यद्यपि बाइबिल के अनुसार अन्तिम ऋषि के विषय में भूतकाल का प्रयोग हुआ है, परन्तु वह भविष्य काल का द्योतक है। इस प्रकार वैदिक संस्कृत में 'लुङ्. लङ्. लिटः' सूत्र से भूतकाल सभी कालों में प्रयुक्त किए जा सकते हैं, उसी प्रकार कुरान की भाषा का भी यही नियम है कि भविष्य में आने वाली बातों को भूतकाल में रखा गया है। बाइबिल के अनुसार भी इस स्थल पर भविष्य काल की बात का उल्लेख भूतकाल मे हुआ है। यदि इस सिद्धान्त को न माना जाये तो सबसे बड़ी आपत्ति यह होगी कि मूसा के जीवित रहते हुए उसके ऊपर अवतरित ग्रन्थ में यह किसी भी प्रकार से नहीं कहा जा सकता, कि मूसा के समान कोई नहीं हुआ।

मूसा के भाइयों में से मोहम्मद साहब जिस सम्बन्ध से घटित होते हैं, उसका वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है। अब्राम, जो पितामह कहे जाते हैं, उनकी दो प्रधान सन्तानें थीं। इब्राहिम की पहली पत्नी का नाम सारै था, जिसके कोई भी संतान न थी। सारै की अनुनय पर अब्राम ने मिस्रदेशीया हाजिरा को पत्नी रूप में स्वीकार कर लिया। कुछ समय बाद उससे इस्माइल नामक पुत्र की प्राप्ति हुई। जिस समय इस्माइल का जन्म हुआ, उस समय अब्राम की आयु छियासी वर्ष की थी। सारै के जब इसहाक नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, उस समय सारै की आयु नब्बे वर्ष की, और अब्राम की आयु सौ वर्ष की थी।[2] निन्यानवे वर्ष की आयु में परमेश्वर ने अब्राम को यह वचन दिया कि वह अब्राम के वंश की पर्याप्त उन्नति करेगा।[3] ईश्वर की वाणी सुनकर अब्राम ने ईश्वर को प्रणिपात किया,[4] जिसे 'इस्लाम धर्म' के अन्तर्गत सजदः कहा जाता है। परमेश्वर से अब्राम का वार्तालाप

---

1. 'And there arose not a prophet since in Israel like unto Moses, whom the Lord knew face to face.'

-Deuteronomy, chapter 34, Verse 10, Old Testament.

2. धर्मशास्त्र, उत्पत्ति, 17/17.
3. धर्मशास्त्र, उत्पत्ति, 17/2.
4. धर्मशास्त्र, उत्पत्ति, 17/4.

कनान देश में हो रहा था, जहाँ अब्राम (इब्राहीम) परदेशी होकर रहता था। कनान को आजकल 'पैलेस्टाइन' कहा जाता है। परमेश्वर ने अब्राम को यह वचन दिया कि मैं तुझको और तेरे बाद तेरे वंश को भी यह सारा कनान देश जिसमें तू परदेशी होकर रहता है, इस रीति से दूँगा कि वह युग–युग उनकी निज भूमि रहेगी।[1] बाईबिल के पुरातन नियम के अनुसार यह सिद्ध होता है कि पैलेस्टाइन में अब्राम की सन्तानों का सर्वदा अधिकार रहेगा। स्मरणीय है कि अब्राम को भविष्य पुराण में अविराम कहा गया है, तथा कुरआन में इब्राहीम। अब्राम का इब्राहीम नाम तब से पड़ा, जब से ईश्वर ने अब्राम को जातियों के समूह का मूल पिता होने का वर दिया।[2] पैलेस्टाइन में इब्राहीम की संतानों का अधिकार सर्वदा रहेगा। इस ईश्वरीय वाक्य से इतना तो स्पष्ट ही है, कि पैलेस्टाइन में रहेगा अधिकार तो इब्राहिम की संतानों का ही, चाहे वह जिस वर्ग की हों। इब्राहीम के इस्माइल नामक पुत्र की परम्परा के अन्तर्गत अरब की निवासियों का वर्ग आता है, और इस्माइल के सौतेले भाई इसहाक के वेश परम्परा में यहूदी लोग आते हैं। सौतेले भाइयों का पारस्परिक द्वेष ही अशान्तिमय होता है, तो फिर सौतेले भाइयों की वंश–परम्परा में उत्पन्न होने वाले लोगों के पारस्परिक द्वेष–भाव का क्या कहना? यही कारण है, कि पैलेस्टाइल में अपना प्रभुत्व स्थापित रखने के उद्देश्य से अरब के लोग और यहूदी लोग परस्पर लड़ते रहते हैं। यह सौतेले भाइयों की वंश परम्परा में उत्पन्न हुए लोगों के पारस्परिक वैमनस्य की आग तब तक ठंडी नहीं हो सकती, जब तक कि वे परस्पर यह न समझ लें, कि पैलेस्टाइन पर उन सभी का अधिकार है, जो इब्राहीम की वंश परम्परा में आते हैं।

इब्राहीम के प्रथम पुत्र इस्माइल की वंश–परम्परा संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत है—

इस्माइल के पुत्र का नाम कीदार था। कीदार की कई पीढ़ी बाद

---

1. 'And I will give unto thee, and to thy seed after thee, the land wherein thou art a stranger, all the land of Canaan, for an everlasting possession, and I will be their God.'

—Old Testament, Genesis, P. 17.8.

2. 'Neither shall thy name anymore be called Abram, but thy name shall be Abraham for a farther of many nations have I made thee.'

—Old Testament, Genesis, 17.5

अदनान हुये। अदनान की कई पीढ़ी बाद कुरैश हुए, और उनकी कई पीढ़ी बाद अब्दिमनाफ़ हुए। अब्दिमनाफ़ के बाद हाशिम, उनके बाद अब्दुल्मुत्तलिब, और अब्दुल्मुत्तलिब के बाद अब्दुल्लाह हुए, जिनके पुत्र मोहम्द साहब थे।

इब्राहीम के द्वितीय पुत्र इसहाक की वंश–परम्परा का क्रम इस प्रकार है—

इसहाक के बाद याकूब (इस्राइल), याकूब के बाद यहूदा तथा यहूदा की कई पीढ़ी के बाद मूसा हुए।

इस प्रकार यह स्पष्ट है, कि इब्राहिम के दो पुत्रों में से सबसे बड़े पुत्र की वंश परम्परा में मुहम्मद साहब आते हैं, और छोटे पुत्र इसहाक की वंश परंम्परा में मूसा आते हैं। मुहम्मद साहब मूसा के बन्धुओं में से थे, अतः मूसा पर अवतरित ब्रह्म वाक्य मुहम्मद साहब पर भी घटित होता है। यद्यपि मुहम्मद साहब यहूदियों में से नहीं थे, परन्तु इस्माइल के वंश में से थे। इस्माइल के छोटे भाई इसहाक के वंश में से मूसा थे। इस प्रकार मुहम्द साहब का मूसा के बन्धु वर्ग में से होना तर्क संगत एवं उपयुक्त सिद्ध हुआ।

3. मूसा के ऊपर उवतरित ईश्वरीय वाणी के अनुसार जिसके भविष्य में होने की सूचना मूसा की पाँचवीं पुस्तक ड्यूटेरानामी में दी गई है, वह मोहम्मद साहब ही थे। इस बात की पुष्टि भावी ऋषि पर ईश्वरीय वाक्यों के अवतरण से सम्बद्ध सिद्धान्त से होती है। मुहम्मद साहब पर ईश्वरीय वाक्यों का अवतरण पवित्र आत्मा के सन्निकर्ष से हुआ। भावी ऋषि के विषय में मूसा का धर्मग्रन्थ यह कहता है कि वह ईश्वरीय आज्ञाओं का प्रसारक होगा। रेवरेण्ट बासवर्थ स्मिथ की पुस्तक 'मोहम्मद एण्ड मोहम्मेडेनिज्म' में इस बात का स्पष्ट उल्लेख, कि मोहम्मद साहब पर ईश्वरीय वाक्य अवतरित होता था, जिसको उन्होंने 'कुरान' नामक ग्रन्थ के रूप में संकलित करके लोगों में प्रसारित किया है।[1] मुहम्मद साहब ने वास्तव में ईश्वरीय आदेशों को ही प्रसारित किया। यदि मोहम्मद साहब

---

1. 'Upon his Mohammed feit the heavenly inspiration and read, as he believed, the decrees of God, which he afterwards promulgated in the Koran.'

—Mohammed and Mohammedenism, P. 98.

मिथ्या ही ऋषि बने होते और असत्य का प्रसार ईश्वर को साक्षी देकर किये होते तो मोहम्मद साहब जीवित न रहते, जैसा कि मूसा की पाँचवीं पुस्तक में कहा गया है, कि जिसके विषय में भविष्यवाणी की जा रही है, यदि उसके स्थान में कोई अन्य व्यक्ति ही अपने को ईशदूत बताकर लोगों को भ्रम में डालने का प्रयास करेगा, और असत्य बातों को प्रसारित करेगा तथा उसकी प्रसारित बातें असत्य सिद्ध होंगी, तो वह वास्तव में लोगों द्वारा मार डाला जाएगा, तथा भावी महर्षि न माना जाएगा।[1] महर्षि को पहचानने के लिये सबसे बडा साधन यह है कि यदि कोई अपने को ऋषि बताये और उसकी बात पूर्णरूपेण सत्य सिद्ध हो, तो उसे ऋषि मानना चाहिये, अन्यथा उसे ऋषि न मानना चाहिये और न ऐसे मिथ्याडम्बर युक्त व्यक्ति से भयभीत ही होना चाहिये।[2]

मोहम्मद साहब पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि न तो मोहम्मद साहब ने अल्पायु में ही मृत्यु का आलङ्गिन किया और न तो वे लोगों द्वारा अकाल मृत्यु के ग्रास बनाये गये। ईश्वरीय बातों का प्रसार करने के उपलक्ष्य में मोहम्मद साहब के ऊपर दुष्ट लोगों द्वारा अनेकों आपत्तियों का प्रहार किया गया, परन्तु फिर भी मोहम्मद साहब सत्य के प्रसार से विचलित नहीं हुए। कुछ परिस्थितियों में मोहम्मद साहब पर प्राण संकट भी आ गया, परन्तु ईश्वर ने उनकी रक्षा की। मोहम्मद साहब के लिए ईश्वर की ओर से यह प्रेरणा भी हुई कि वह किसी बात की चिन्ता न करें, क्योंकि ईश्वर उनका रक्षक है, अतः उन्हें धर्म प्रसार के व्याघातकारियों द्वारा दिये जा सकने वाले मृत्यु का भय नहीं है।[3] यही कारण था कि

---

1. 'But the prophet, which shall presume to speak a word in my name which I have not commanded him to speak, or that shall speak in the name of other Gods, even that prophet shall die.'

—Deuteronomy, chaper 18, Verse 20.

2. When a prophet speaketh in the name of Lord, if the thing follow not, nor come to pass, that is the thing, which the Lord hath not spoken, but the prophet hath spoken it presumptuously : thou shalt not be afraid of him.'

—Deuteronomy, 18-22.

3. 'वल्लाहु यास्सिमोक मिनन्नास'
(ईश्वर तुमको लोगों से बचाये रखेगा)
कुरान सूरः 5, आयत 67.

मोहम्मद साहब निर्भयता–पूर्वक ईश्वरीय आदेशों को, जो ब्रह्म के रूप में उनके ऊपर अवतरित होते थे, प्रसारित करना प्रारम्भ कर दिया।'

अब मोहम्मद साहब की बातों की सत्यता का प्रमाण प्रस्तुत किया जा रहा है।

मोहम्मद साहब ने जब धार्मिक प्रसार में अग्रसर होने का कर्म प्रारम्भ किया, तो मक्के के लोग विरोधी हो गये, और परस्पर उन्होंने यह प्रतिज्ञापत्र लिखा, कि वे मोहम्मद साहब को अपनी जाति से बहिष्कृत कर देंगे। प्रतिज्ञापत्र में सभी वर्ग के लोगों के हस्ताक्षर हुए। प्रतिज्ञापत्र मक्का के शिवालय में लटका दिया गया था। मोहम्मद साहब अबूतालिब की घाटी में रहते थे, जो दो पहाड़ियों के बीच में थी। जिस स्थान में मोहम्मद साहब बहिष्कृत होने की अवस्था में रहते थे, वह स्थान शिवालय से तीन मील की दूरी पर था। तीन वर्ष जब मोहम्मद साहब को वहाँ रहते हुए व्यतीत हो गये, तब उन्होंने अपने पितृव्य अबूतालिब से मक्का वालों को कहला भेजा, कि प्रतिज्ञापत्र को तो अब दीमक चाट गये हैं, इसलिए प्रतिज्ञापत्र निरर्थक हो गया। अबूतालिब ने मक्का वालों से कहा कि अब मोहम्मद साहब को अपने वर्ग में सम्मिलित कर लेना चाहिये, क्योंकि प्रतिज्ञापत्र भी नष्ट हो चुका है, और मोहम्मद साहब को बहिष्कृत करना भी बहुत बुरी बात है। लोगों ने स्वीकार कर लिया, कि यदि प्रतिज्ञापत्र नष्ट हो चुका होगा, तो अवश्य मोहम्मद साहब को बहिष्कृत नहीं किया जायेगा, अन्यथा उन्हें इसी स्थिति में रहना पड़ेगा। जब प्रतिज्ञापत्र देखा गया, तो परमेश्वर के नाम को छोड़कर शेष भाग लुप्त हो चुका था, इसलिए मोहम्मद साहब को मिला लिया गया। यह मोहम्मद साहब के बात की सत्यता का ही प्रमाण है, कि तीन वर्ष तक लोगों से बहिष्कृत रहकर भी उन्होंने प्रतिज्ञापत्र के दीपक द्वारा चाट जाने की बात बता दी।'[2]

दूसरी घटना यह है, कि मोहम्मद साहब ने यह एक भविष्यवाणी

---

1. 'Muhammad became the recipient of God's commands, his messenger on earth and his apostle to the people of Arabia.'

—The Influence of Islam on Indian Culture,
Preface, Dr. Tarachand M. A., D. Phil,
(Oxford)

2. 'तवारीख हबीब इलाह'

—मुफ़्ती इनायत अहमद, पृष्ठ 20

की थी कि अरब के हिजाज प्रान्त में एक ऐसी अग्नि प्रज्जवलित होगी, जिसके प्रकाश में बसरा नगर की पहाड़ियाँ दृष्टिगत होंगी। मोहम्मद साहब के देहान्त के तैंतालिस वर्ष बाद सन् 54 हिजरी में मदीना से कुछ दूरी पर यह अग्नि प्रज्जवलित हुई, और काफी समय तक रही।[1] तीसरी घटना की सत्यता का भी निरीक्षण करें—मोहम्मद साहब ने उस्मान को देखकर एक दिन कहा, कि यह लोगों द्वारा प्रहार किये जाने पर वीरगति को प्राप्त होंगे, इस बात का उल्लेख बुखारी की हदीस में है। मोहम्मद साहब के देहान्त के चौबीस वर्ष बाद यह घटना सत्य प्रमाणित हुई।[2] एक बार मोहम्मद साहब ने अली से यह बताया था, कि तुम एक व्यक्ति के द्वारा सिर में प्रहार खाकर मारे जाओगे, और रक्त तुम्हारी दाढ़ी को सिक्त कर देगा। मोहम्मद साहब की मृत्यु के तीस वर्ष बाद इब्नि मुल्जिम खारिजी ने अली के सर के ऊपर प्रहार किया जिससे रक्त बहकर उनकी दाढ़ी को भिगोने में समर्थ हुआ।[4] एक बार मोहम्मद साहब प्रवचन कर रहे थे। उसी समय उनके बड़े नाती हसन भी उसी मंच पर चढ़कर बैठ गये। मोहम्मद साहब ने बताया, कि मेरा यह बालक एक दिन बहुत बड़ा नायक बनेगा, और मुसलमानों के दो बड़े विरोधी वर्गों में मेल करा देगा। मोहम्मद साहब की मृत्यु के तीस वर्ष बाद सन् 40 हिजरी में जब हसन स्वयं खलीफा थे, और अमीर मोआवियः से लड़ रहे थे, आपने उनसे मेल कर लिया, जिससे मुसलमानों में अपार आनन्द छा गया, और हर्षातिरेक से यह स्वयं भी प्रफुल्लित हो गये।[5]

उनकी सत्यता से सम्बन्धित एक और घटना पर दृष्टिपात करना उचित है, जब मोहम्मद साहब मदीना जा रहे थे, तो क़ुरैश ने इनको पकड़ने के लिये पुरस्कार निर्धारित किया।

जिससे पुरस्कार के लोभ में आकर सुराका नामक एक व्यक्ति घोड़े पर सवार होकर उन्हें खोजता हुआ पीछा करने लगा। मोहम्मद साहब ने सुराका को देखकर भूमि से कहा कि 'ऐ भूमि इसे पकड़ ले।' इतने पर सुराका के घोड़े के पैर भूमि में घुटने तक धँस गये। घबड़ाकर सुराका ने मोहम्मद साहब की अनुनय की, तब घोड़ा मुहम्मद साहब की इच्छा के

1. तवारीख हबीब इलाह —मुफ़्ती इनायत अहमद, पृष्ठ 162
2. तवारीख हबीब इलाह —मुफ़्ती इनायत अहमद, पृष्ठ 162
3. तवारीख हबीब इलाह —मुफ़्ती इनायत अहमद, पृष्ठ 162

अनुसार भूमि में धँसने की स्थिति से बाहर हो गया। इसी प्रकार तीन बार होने के बाद सुराका ने प्रतिज्ञा की कि वह मोहम्मद साहब की बात किसी से भी नहीं कहेगा, और न मोहम्मद साहब को धोखा देगा। मोहम्मद साहब के चमत्कारों को देखकर सुराका बहुत ही प्रभावित हुआ, और मोहम्मद साहब से अनुनय की कि मुझे आप एक वचन दें, जिससे मैं आपके राज्य होने पर सभी प्रकार की हानियों से परिवार सहित बचा रहूँ। मोहम्मद साहब ने स्वीकृति देते हुये उससे यह कहा, कि ऐ सुराका! तुम्हारी उस दिन क्या गति होगी, जिस दिन ईरान के सम्राट् किसरा के स्वर्णमय कंकड़ तुम्हारे हाथों में पहनाये जाएंगे। मोहम्मद साहब के देहान्त के पाँच ही वर्ष के अन्दर सन् 16 हिजरी में दूसरे खलीफ़ा उमर के समय में साद सेनापति के द्वारा ईरान का सम्राट् मारा गया, और वहाँ का बहुत सा सामान लूटा जाकर मदीना में लाया गया। उमर ने सब सामान स्ववर्गों में वितरित कर दिया, और कंकड़ को देखकर सुराका ने कहा, कि मोहम्मद साहब की वह भविष्यवाणी, जो उन्होंने मेरे विषय में की थी, आज पूर्ण हुई, जिसे सुनकर उमर को भी मोहम्मद साहब की बात का स्मरण हुआ।[1]

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि मोहम्मद साहब जो कुछ बताते थे, वह दैनिक जीवन में भी सत्य सिद्ध होता था, अतः जिसके विषय में मूसा ने भविष्यवाणी की है, वह मोहम्मद साहब ही थे, कोई अन्य नहीं, क्योंकि मूसा के समान मोहम्मद साहब थे, मूसा की बिरादरी में भी थे, तथा जो बातें बताते थे, सब सत्य हो जाती थीं।

●

---

1. तवारीख हबीब इलाह —मुफ्ती इनायत अहमद, पृष्ठ 163

अध्याय 5

वह ऋषि

अन्तिम ऋषि के विषय में अनेक प्रकार से भविष्यवाणियाँ की गई हैं। कहीं अन्तिम ऋषि को किसी नाम से व्याहृत किया गया है, तो कहीं किसी नाम से। इन नामों की विविधरूपता को देखकर व्यक्ति के अन्दर इस संशय का आना असम्भव नहीं, कि यदि एक ही ऋषि को लक्षित करके भविष्यवाणियाँ हुई हैं, तो एक ही नाम सभी भविष्यवाणियों में आना चाहिए था, परन्तु ऐसा नहीं है, इसलिए भिन्न–भिन्न नामों से व्याहृत होने वाले भिन्न–भिन्न व्यक्तियों के आने की सूचना उन भविष्यवाणियों में है। उपर्युक्त संशय का समाधान प्रस्तुत है। व्यक्ति विशेष के गुणों के आधार पर उसे अनेक उपाधियों से विभूषित किया जा सकता है, जो उसके नाम का स्थान ग्रहण कर लेती हैं। उदाहरणस्वरूप विष्णु को ही लीजिए—वे पीला वस्त्र धारण करते हैं इसलिए उन्हें पीताम्बर कहा जाता है। वे लक्ष्मी के पति हैं, इसलिए उन्हें लक्ष्मीपति कहा जाता है। वे चक्र धारण करते हैं, इसीलिए उन्हें चक्री कहा जाता है। शंकर जी त्रिशूल धारण करते हैं, इसीलिए उन्हें त्रिशूली कहा जाता है। वे वृषभ अर्थात् बैल की सवारी करते हैं, इसलिए उन्हें वृषभवाहन कहा जाता है। सरस्वती को ही लीजिए—वे वीणा बजाती हैं, इसलिए उन्हें वीणावादिनि कहा जाता है। वह ज्ञान और विद्या के सरोवरों से युक्त हैं, इसलिए उन्हें सरस्वती कहा जाता है। इसी प्रकार अन्तिम ऋषि के विषय में भी जिस स्थल में जो वर्णन हुआ है, वह उस देश की भाषा में हुआ है, जिस देश की भाषा में ग्रन्थ है, अतः उस देश की भाषा के अनुसार व्युत्पत्ति–जन्य अर्थ उस नाम पर घटित होगा, जो नाम ऋषि का दिया हुआ है।

कुछ स्थलों में तो केवल ऋषि को वह कहा गया है। अब देखना यह है, कि जिस ऋषि को वह कहा गया है, वह कौन सा ऋषि है, और उसके विषय में क्या–क्या भविष्यवाणी हुई हैं? पहले हम भविष्यवाणियों को पूर्ववर्ती ऋषियों के मुख से प्रस्तुत कर रहे हैं—

'यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। और मैं पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह

सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।'[1] 'परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा,[2] और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।' 'मैं अबसे तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूँगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है।'[3] परन्तु अब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।[4] 'तो भी मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।'[5] परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।[6]

'मैं तो पानी से तुम्हें मन–फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझसे शक्तिशाली है, मैं उसकी जूती उठाने के

---

1. 'If you love me, keep my commandments. And I will pray the father and he shall give you another comforter that he may abide with you forever.'

—St. John, 14.15.16.

2. 'But the comforter which is the Holy Ghost, whom the father will send in my name, he shall teach you all things, and bring ali things to your remembrance, whatsoever I have said unto you.'

—St. John, 14. 26.

3. 'Here after I will not talk much with you for the prince of this world cometh, and hath nothing in me.'

—St. John, 14. 30.

4. 'But when the comforter is come whom I will send unto you form the father, even the spirit of the truth, which proceedeth from the father, he shall testiy of me.'

—St. John, 15. 26.

5. 'Nevertheless I tell you the truth, It is expedient for you that I go away for if I go not away, the comforter will not come unto you, but if I depart I will send him unto you.'

—St. John, 16.7.

6. 'Howbeit when he, the spirit of truth, is come, he will guide you into all truth : for he shall not speak of himself, but whatsoever he shall hear, that shall he speak, and he will shew you things to come.'

—St. John, 16.13.

योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।'[1] उसका सूत्र उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूँ को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नही।[2]

भावी भविष्यद्वक्ता किस जाति में पैदा होगा, इस विषय पर भी ईसा–मसीह के वचन ये हैं–'इसलिए जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या करेगा? उन्होंने उससे कहा, वह उन लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा, और दाख की बारी का ठीका और किसानों को देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे।'[3] 'इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा, और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा।'[4]

उपर्युक्त भविष्यवाणियों के पहले तीन भविष्यद्वक्ता ऋषियों की प्रतीक्षा थी। प्रताक्षित ऋषियों में प्रथम था एलिय्याह और दूसरा था यीशु मसीहा। तीसरे ऋषि को वह ऋषि नाम से व्यवहृत किया गया है। सर्वप्रथम यह स्पष्ट कर लेना आवश्यक है, कि प्रथम दो ऋषि हुए अथवा नहीं, क्योंकि दोनों के बाद 'वह ऋषि' का आविर्भाव निश्चित है।

1. **एलिय्याह**–ईसामसीह के पहले एलिय्याह के आने की भविष्यवाणी की गई थी। एलिय्याह ही यूहन्ना के रूप में प्रकट हुआ था, जैसा कि ईसा–मसीह ने स्वयं कहा है, कि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि एलिय्याह आ

---

1. 'I indeed baptize you with water unto repentance : but he that cometh after me is mightier than I, whose shoes I am not worthy to bear : he shall baptize you with the Holy Ghost and with the fire.'

—St. Mathew, 3.11.

2. 'Whose fan is in his hand and he will throughly purge his floor, and gather his wheat into the garner, but he will burn up the chaff with unquenchable fire.'

—St. Mathew, 3.12.

3. 'When the lord therefore of the wineyard cometh, what will he do undo those husbandmen? They say unto him, he will miserably destroy those wicked men, and will let out his wineyard unto other husbandmen, which shall render him the fruit in their seasons.'

—Mathew, 21.40-41.

4. 'Therefore, say I unto you, the kingdom of God shall be taken from you', and given to a nation bringing forth the fruits thereof.'

—St. Mathew, 21.43

चुका, और उन्होंने उसे नहीं पहचाना, परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया।'[1] एलिय्याह के जीवनकाल में भी ईसा मसीह ने लोगों को सचेत किया था, कि यूहन्ना ही एलिय्याह है। ईसा मसीह के शब्दों के अनुसार एलिय्याह से सम्बन्धित भविष्यवाणी यह है—

'यूहन्ना तक सारे भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था भविष्यवाणी करते रहे। और चाहो तो मानो, एलिय्याह जो आने वाला था, वह यही है। जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले।'[2]

यूहन्ना ने राजा हेरोदोस को इस बात के लिए कहा था, कि हेरोदोस अपने भाई फिलिप्पूस की पत्नी को अपनी पत्नी के रूप में न प्रयुक्त करे। हेरोदियास जो पहले फिलिप्पुस की पत्नी थी, उसकी अनुमति से उसके तत्काल नियुक्त पति महोदय हेरोदोस ने यूहन्ना को कारागार में डाल दिया था। यूहन्ना ने राजा को हेरोदियास से विवाह करने के लिए मना किया था, अतएव हेरोदियास यूहन्ना को मरवा डालने की चिन्ता में सदा कोई न कोई उपाय खोजती रहती थी। यूहन्ना की धार्मिकता और पवित्रता से प्रभावित होने के कारण राजा हेरोदोस उससे भयभीत था, और उसे सुरक्षित रखे हुए था, तथा यूहन्ना के प्रवचन सुन–सुनकर आनन्दित होता था। अपने जन्म दिन के उत्सव को मनाने की उत्कण्ठा से राजा हेरोदोस ने अपने प्रधानों को एवं विशिष्ट लोगों को भोजनार्थ निमन्त्रित किया। उसी दिन हेरोदियास की पुत्री ने अपनी नृत्यकला से राजा हेरोदोस को मुग्ध कर लिया, जिससे विवश होकर राजा हेरोदोस ने लड़की से कहा, कि मेरे आधो राज्य तक भी जो कुछ तू माँगेगी, उसे प्रदान करने के लिए मैं सहर्ष उद्यत हूँ। लड़की ने अपनी माँ से पूछ कर यूहन्ना के सिर को राजा से थाल में रखकर लाने का वर माँगा। राजा वचनबद्ध था, अतएव न चाहते हुए भी उसे ऐसा करना पड़ा। यह सत्य ही है, कि कुछ स्त्रियाँ अपने प्रेम के मार्ग की दीवार को भी गिरा देती हैं, तथा इतनी निर्दय होती हैं, कि महात्माओं

---

1. 'But I say un to you, that Elias is come already, and they knew him not, but have done unto him whatsoever they listed.'

—Mathew, 17.12.

2. 'For all the prophets and the law prophesied until John. And if ye will receive it, this is Elias, which was for to come. He that hath ears to hear, let him hear.

—Mathew, 11.13-15.

के जीवन को भी तृण के समान नगण्य समझती है।[1] इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है, कि यूहन्ना ही एलिय्याह था, जिसके तत्काल बाद ईसा मसीह हुए। वैसे तो दोनों समकालीन थे, परन्तु जीवन–यात्रा के प्रसङ्ग में परवर्ती ईसा–मसीह ही घटित होते हैं।

(2) **यीशु मसीह**–इन्होंने ही इस बात की साक्षी दी थी, कि यूहन्ना ही एलिय्याह है। ये मरियम के पुत्र थे। इनकी माँ ने इन्हें कुमारावस्था में ही जन्म दिया था। इनके कोई पिता न थे। ईश्वर ने इन्हें वह शक्ति प्रदान की थी, जिसके प्रभाव के कारण वे रोगियों का स्पर्श करके भी उन्हें स्वस्थ कर देते थे। इनके उपदेश इतने प्रभावोत्पादक होते थे, कि सुनने वाले भय से घबड़ा जाते थे। इनकी महत्ता को हूण देशवासियों ने नहीं समझा। भारत के राजा शकराज जो विक्रमादित्य के पौत्र थे, जब हूण देश के मध्य भाग में पहुँचे, तो पर्वत में बैठे हुए, श्वेतवस्त्रों से अलंकृत एक पुरुष को देखा। उनसे शकराज ने पूछा, कि आप कौन हैं, और आपका धर्म क्या है? तब इन्होंने बताया कि मैं ईसा मसीह हूँ, और मेरा धर्म वैदिक जप को आश्रित करके निर्मलान्तःकरण होकर परमेश्वर का ध्यान करना है।[2] उक्त स्थान में अपने आने का कारण भी ईसा मसीह यह बताते हैं, कि सत्य के नष्ट हो जाने पर तथा म्लेच्छदेश के मर्यादा से हीन हो जाने पर मैं मसीह यहाँ आया हूँ।[3] अपने नामकरण के विषय में ईसा मसीह यह बतलाते हैं, कि नित्य शुद्ध, कल्याण करने वाले परमेश्वर का ध्यान मैं सदैव करता हूँ, इसलिए मेरा नाम ईसा मसीह है।[4] इतने बड़े माहत्मा एवं धर्मोपदेशक के

---

1. बाइबिल (धर्मशास्त्र), मरकुस, छठा अध्याय
2. 'म्लेच्छेषु स्थापितोधर्मो मया तच्छृणु भूपते।
   मानसं निमलं कृत्वा मल देहे शुभाशुभम्।
   नैगमं जपमास्थाय जपेत निर्मल परम्।
   न्यायेन् सत्यवचसा मनसैक्यैन मानवः।।'
   —भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, तृतीय खण्ड, द्वितीय अध्याय, श्लोक 27–28
3. श्रुत्वोवाच महाराज प्राप्ते सत्यस्य संक्षये।
   निर्मर्यादे म्लेच्छदेशे मसीहोऽहं समागतः।।
   —भविष्यपुराण, प्रतिसर्ग पर्व, तृ० ख०, 2/25
4. 'ईशमूर्तिर्ह्रदिप्राप्ता नित्यशुद्धा शिवङ्करी।
   ईशा मसीह इति च मम नाम प्रतिष्ठितम्।।'
   —भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, तृ० ख० 2/31

संहार के लिए तदेश्वासियों ने इतने भीषण प्रयास किए, कि दुःख है इस बात का, कि वे राक्षसों से भी बढ़कर दुष्कर्मी थे।

(3) **वह ऋषि**—एलिय्याह और ईशा मसीह के हो जाने के बाद 'वह ऋषि' के उत्पन्न होने का अवसर आता है, जिसके विषय में ईसा मसीह ने भविष्यवाणी की थी। वह ऋषि, जिसे ग्रीक भाषा लिखे गए बाइबिल में 'पेराक्लीट' (फ़ारकलीत) कहा गया है, उसके विषय में विवरण प्रस्तुत किया जाएगा, कि वह कौन है?

वह ऋषि पेराक्लीट नाम से व्यवहृत किया गया है। 'पेराक्लीट' शब्द के अर्थ पर विचार कर लेना आवश्यक है, कि उसका क्या अर्थ है?

पेराक्लीट का अर्थ—'पेराक्लीट' शब्द का अर्थ बाइबिल के आजकल के अंग्रेजी अनुवाद में 'कम्फ़ोर्टर' आराम पहुँचाने वाला' तथा हिन्दी अनुवाद में 'सहायक' दिया गया है। 'संसार गुरु' नामक पुस्तक में बाबा अलीमदास ने 'पेराक्लीट' को यूनानी भाषा में 'फारकलीत' नाम से व्यवहृत किया है, जिसका अर्थ उन्होंने 'प्रशंसा योग्य' बताया है।[1] सर विलियम म्योर ने मुहम्मद साहब की जीवन–कथा लिखते समय अपने ग्रन्थ के संक्षिप्त संस्करण में उल्लेख किया है, कि अरब के लोगों के मध्य किसी लड़के का नाम 'मोहम्मद' पड़ जाये, यह एक नवीन एवं विचित्र बात है। यद्यपि यह नाम अरब के लोगों को अज्ञात नहीं था, परन्तु नवीन अवश्य था। 'मोहम्मद' शब्द, अरबिक की प्रशंसा अर्थ वाली हम्द धातु से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ 'प्रशसित' होता है। हम्द धातु से निष्पन्न दूसरा शब्द 'अहमद' बनता है। बाइबिल के न्यू टेस्टामेण्ट के अरबी में अनूदित कुछ संस्करणों में 'पेराक्लीट' का अर्थ 'अहमद' दिया हुआ है, जो मुसलमानों के धर्म की दृष्टि से मान्य तथा उनका समर्थक रहा। इसी कारण से मुसलमानों ने जूज और क्रिश्चियन को सम्बोधित करते हुए कहा, कि हमारे ऋषि का उल्लेख आप

---

1. 'उन्हीं महर्षि का नाम फारक़लीत अर्थात् 'प्रशंसा योग्य' है। फारक़लीत, अहमद तथा मोहम्मद का यूनानी अनुवाद है।'

संसारगुरु, पृ० 5—बाबा अलीमदास

लोगों की धर्म पुस्तकों में भी है।[1] जिस पेराक्लीट के विषय में बाइबिल में वर्णन आया है, उसकी सिद्धि मोहम्मद साहब पर होती है। सर विलियम म्योर ने इस बात का उल्लेख किया है, कि मरियम के पुत्र ईसा मसीह ने इस बात की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है, कि मैं पुरातन विधान की पुष्टि एवं समर्थन के लिए भेजा गया ऋषि हूँ, परन्तु मेरे बाद भी एक होगा, जिसका नाम 'अहमद' होगा।[2] यहाँ 'अहमद' नाम 'पेराक्लीट' के लिए प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि बाइबिल में ईसा मसीह ने अपने बाद आने वाले ऋषि को 'पेराक्लीट' शब्द से व्यवहृत करते हुए, उसकी बातों के मानने के लिए भी लोगों को उत्साहित किया है।[3] इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है, कि 'पेराक्लीट' का अर्थ प्रशंसक होता है, जिसका अरबी अनुवाद 'अहमद' होता है।

बाइबिल के 'न्यू टेस्टामेण्ट' में जिसके आने की भविष्यवाणी की गई है, उसमें क्या–क्या विशेष बातें होंगी, जिससे वह पहचाना जाएगा, इस बात पर विवरण प्रस्तुत है–

(क) **ईसा मसीह द्वारा कही गई बातों का स्मरण कराने वाला**–ईसा मसीह ने इस बात का स्पष्ट निर्देश किया है, कि वह नया विधान लेकर

---

1. 'The child was Called Mahomet. This name was rare among the Arabs, but not unknown. It is derived from the root Hamd and signifies, 'The praised.' Another from is Ahmad, which having been erroneusly employed as a translation of 'The Paraclete' in some Arabic Version of the New Testament, became a favourite term with Mohametans, specially in addressing Jews and Christians, for it was they said, 'The title under which the prophet had been in their books predicted.'

—Life of Mahomet (Abridge Edition)
--Sir William Muir, P. 5. (London 1871)

2. That the promise of the paraclete was capaple of perversion, we see in the heresy of Montanus : and it is probable that a garbled version of the same promise communicated to Mahomet may have given rise to the following passage (सूर : 61 रूफ़). And calll to mind when Jesus, son of Mary said :-O' children of Israeli verily I am apostle of God unto you, attesting the Book of the Law revealed before me land giving good tidings of a prophet that shall come after me, whose name is AHMAD.'

—Life of Mahomet. (A bribge Edition), Page 164.

3. Bible, John 14.16.

नहीं, अपितु पुरातन विधान की पुष्टि के लिए आए थे।[1] ईसा मसीह जिस विधान की पुष्टि के लिए आए थे, वह विधान था—मूसा का विधान।

(ख) **ईसा मसीह के पश्चात् आना**—वह ऋषि जिसके आने की भविष्यवाणी की गई है, वह संसार से ईसा मसीह के प्रस्थान के बाद आएगा।

(ग) **संसार के नायक के रूप में आगमन**—वह ऋषि जब आएगा, तो संसार के नायक के रूप में आएगा।

(घ) **सत्य का मार्ग-प्रदर्शक**—वह ऋषि संसार को सत्य का मार्ग दिखाएगा।

(ड.) **पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देने वाला**—वह ऋषि पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा, इस बात की ओर संकेत बाइबिल के सेण्ट मैथ्यू (3/11) से मिलता है। इस भविष्यवाणी से कुछ लोग ईसा मसीह का ग्रहण करते हैं, परन्तु ईसा मसीह ने पवित्र आत्मा से बपतिस्मा तो दिया, परन्तु आग से बपतिस्मा नहीं दिया। आग से बपतिस्मा देने का तात्पर्य है, कि दुष्टों को मार्ग दिखाने के लिए उनके साथ युद्ध करके उन्हें पराजित करना और उन्हें ईश्वरीय मार्ग पर लाना। ईसा मसीह तो कोई भी युद्ध नहीं किये, अतः उक्त भविष्यवाणी 'वह ऋषि' को अधिकृत करके कही गई है।

(च) **हाथ में सूप रखने वाला तथा खलिहान साफ करने वाला**—बाइबिल में उल्लेख है, कि भावी ऋषि हाथ में सूप रखेगा और खलिहान साफ करेगा। इतना ही नहीं, वह गेहूँ को तो खत्ते मे इकट्ठा करेगा, और भूसी को गेहूँ से अलग करके आग में जला देगा। बाईबिल के उक्त कथन से कुछ लोग यह समझते हैं, कि भावी ऋषि सदा अपने हाथ में सूप लिए हुए घूमा करेगा और खलिहान साफ किया करेगा, तथा गेहूँ को खत्ते में एकत्र करके भूसी को आग में जलाया करेगा। ऐसा समझने वालों की बुद्धि में जड़ता का पत्थर पड़ा हुआ है, जिससे वे ऋषि के काम—सूप लेना तथा खलिहान साफ करना समझते हैं। बाइबिल में जो बताया गया है, वह अलङ्कारिक शैली में कहा, गया है, जिसका अभिप्राय यह है, कि भावी

---

1. 'Think not that I am come to destroy the Law, or the prophets, I am not come to destroy, but to fulfil.'

—Saint Mathew, 5.17.

ऋषि की बुद्धि सदसत् का विवेक करने वाली होगी। 'सार–सार को गहि रहे, थोथा देइ उड़ाय' के सिद्धान्त से भावी ऋषि तत्व की बातों को ग्रहण करेगा, और तत्त्वहीन बातों को वान की आग में जला देगा। खलिहान साफ करने का अर्थ यह है, कि जिस व्यक्ति को तत्त्व की बातें बताएगा, पहले उसका अन्तःकरण साफ करेगा।' 'खलिहान्' शब्द 'अन्तःकरण' के लिए प्रयुक्त हुआ है, जिसमें कुछ रखने के पहले उसकी सफाई आवश्यक है।

(छ) **अन्य जाति में आने वाला**—भावी ऋषि अन्य जाति में आएगा, इस बात का उल्लेख बाइबिल में स्पष्ट रूप से किया गया है। ईसा मसीह ने (मैथ्यू–21, 43) स्पष्ट रूप से घोषित किया है, कि इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, कि परमेश्वर का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को, जो उसका फल लाए, दिया जाएगा। इससे स्पष्ट है कि भावी ऋषि उस जाति में पैदा होगा, जिससे भिन्न वे लोग हैं, जिन्हें सम्बोधित करके ईसा मसीह ने कहा था। इसीलिए ईसाइयों एवं जूजों को यह आशा छोड़ देनी चाहिए कि भावी ऋषि उनकी जाति में पैदा होगा।

अब हम प्रत्येक विशेषता के आधार पर उस व्यक्ति को प्रमाणित कर रहे हैं, जो 'वह ऋषि' होने की योग्यता रखता है।

अन्तिम ऋषि की सिद्धि—'पेराक्लीट' का अर्थ 'प्रशंसक' होता है, जिसे अरबी भाषा में 'अहमद' कहते हैं। पहले इस बात को हम दिखा चुके हैं, कि अरबी में बाइबिल के अनुवाद में 'पेराक्लीट' का अर्थ 'अहमद' बताया गया है। उपर्युक्त अर्थ मुसलमानों के समर्थन में था और ईसाई लोग स्वाभाविक रूप से मुसलमानों से द्वेषभाव रखते हैं, इसलिए उन्होंने उपर्युक्त अनुवाद को गलत सिद्ध किया।

आज जो अनुवाद बाइबिल के मिलते हैं, उनमें 'पेराक्लीट' का अनुवाद 'कम्फ़ोर्टर' (अंग्रेजी में) और 'सहायक' (हिन्दी में) दिया हुआ है। यदि हम 'पेराक्लीट' का अर्थ सहायक या कम्फ़ोर्टर ही मानें तो भी उपर्युक्त दोनों बातें मोहम्मद साहब के पक्ष में पूर्ण रूपेण घटित होती हैं।

सर्वप्रथम हम इस बात की पुष्टि कर रहे हैं, कि मोहम्मद साहब 'सहायक' थे। चादर ओढ़े हुए एक दिन मोहम्मद साहब नमाज पढ़ने जा रहे थे, तभी एक अरबी देहाती ने आकर आपकी चद्दर इतनी तेजी से खींची, कि चद्दर की रगड़ से, आपकी गरदन दुखने लगी। मोहम्मद साहब ने प्रश्न

किया, कि तुम क्यों ऐसा कर रहे हो? अरबी देहाती ने उत्तर दिया कि मुझे एक आवश्यकता आ पड़ी है, उसकी आप पूर्ति करें। मोहम्मद साहब ने नमाज पढ़ना रोककर उस देहाती का काम कर दिया।[1] प्रस्तुत उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है, कि मोहम्मद साहब लोगों की सहायता करने में इतना आसक्त रहते थे, कि नमाज पढ़ना बन्द करके भी दूसरों की सहायता करना उचित समझा, परन्तु आज के मुसलमान नमाज के आगे किसी मरते हुए प्यारे को सम्भवतः पानी भी न पिलाएँ।

'कम्फ़ोर्टर' का अर्थ होता है—'आराम देने वाला'।

मोहम्मद साहब सभी को आराम देने वाले थे। केवल मनुष्यों को ही नहीं, उन्होंने पशुओं को भी आराम दिया। मोहम्मद साहब ने पशुओं के कान तथा पूंछ को काटने की परम्परा को बन्द कराया, और पशुओं के दागने का भी निषेध किया। सवारी पर काठी तथा जीन लगाकर देर तक खड़ा रखने का निषेध करने के अतिरिक्त मोहम्मद साहब ने पशुओं के पारस्परिक लड़ाए जाने को भी बुरा बताया।[2] जीवित लड़कियों को मारकर उन्हें भूमि में गाड़ देने को भी मोहम्मद साहब ने बुरा बताया। इस प्रकार यह सिद्ध होता है, कि मोहम्मद साहब 'आराम देने वाले' भी थे।

(क) **ईसा मसीह की कही गई बातों का स्मरण कराने वाला**—अन्तिम ऋषि को ईसा की कही गई बातों का स्मरण कराने वाला कहा गया है। मोहम्मद साहब ने अपने पहले आने वाले सभी ऋषियों का समर्थन किया है और प्रत्येक मुसलमान के लिए यह आवश्यक बताया है कि वह कुरान एवं इससे पूर्व उतारे गए सभी ईश्वरीय ग्रन्थों पर विश्वास रखें। इस प्रकार वेद, बाइबिल एवं कुरआन तीनों ही ग्रन्थ प्रत्येक मुसलमान (आस्तिक) के लिए श्रद्धेय और मान्य सिद्ध होते हैं। इस प्रकार ईसा मसीह का समर्थन भी मोहम्मद साहब करते हैं। क्योंकि ईसा मसीह मोहम्मद साहब के पूर्ववर्ती ऋषि हैं। ईसा मसीह मूसा के विधान की पुष्टि के लिए आए थे, और मूसा के विधान का समर्थन अत्यधिक प्राबल्य के साथ मोहम्मद साहब ने किया है।

(ख) **ईसा मसीह के पश्चात् आना**—मोहम्मद साहब ईसा मसीह के

---

1. संसारगुरु, पृ० 60—'बाबा अलीमदास'
2. संसारगुरु, पृ० 60—'बाबा अलीमदास'

परवर्ती थे।

(ग) **संसार के नायक के रूप में आमगन**—बाइबिल में अन्तिम ऋषि के लिए कहा गया है, कि वह संसार का नायक होगा। मोहम्मद साहब ने जिस धर्म का प्रचार एवं प्रसार किया उसे सनातन धर्म और सार्वभौम धर्म कहा। कुछ लोग यह ग़लत समझते हैं कि मोहम्मद साहब इस्लाम धर्म के संस्थापक थे, और इस्लाम धर्म तभी से इस जगतीतल में प्रसारित हुआ, जब से मोहम्मद साहब ने इसका प्रसार किया। 'इस्लाम' का अर्थ 'ईश्वरीय' होता है। इसे मोहम्मद साहब ने कहा है, कि यह सनातन धर्म है। सनातन का अर्थ होता है—सब दिन से चला आने वाला। अपने जीवन काल में ही मोहम्मद साहब ने बहुसंख्यक लोगों का नेतृत्व प्राप्त कर लिया था। अरब में रहने वाले लोगों को और पिशाचों को अपने वश में कर लिया।

(घ) **सत्य का मार्ग-प्रदर्शक**—मोहम्मद साहब ने सत्य का मार्ग प्रदर्शित किया, और ईश्वर से पराङ्मुख लोगों को सत्य का ब्रह्म—मन्त्र सिखाया—'लाइलाह इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलल्लाह।' 'लाइलाह इल्लल्लाह' को वेदान्त में 'एकं ब्रह्म दितीयं नास्ति' कहा गया है।

(ड.) **पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देने वाला**—'पवित्र आत्मा' शब्द जिब्रील के लिए आया हुआ है। जिब्रील को ही सरस्वती कहा जाता है, जो ईश्वरीय ज्ञान को ऋषियों तक पहुँचाती हैं। मोहम्मद साहब को ईश्वरीय ग्रन्थ अध्ययन सरस्वती ने ही आकर पर्वतीय गुफा में कराया और मोहम्मद साहब ने उस ग्रन्थ का ज्ञान लोगों तक पहुँचाया।। दुष्टों को मार्ग दिखाने के लिए मोहम्मद साहब ने पहले तो शान्ति का आश्रय लिया, परन्तु जब शान्ति से वे लोग न माने और उद्दण्डता करते रहे, तो मोहम्मद साहब ने उनका दमन करने के लिए आग (उष्णता) अर्थात् युद्ध का आश्रय लिया।

(च) **हाथ में सूप रखने वाला तथा खलिहान साफ करने वाला**—हाथ में सूप रखने तथा खलिहान साफ करने का अर्थ तो पहले स्पष्ट किया जा चुका है, कि लोगों के अन्तःकरण को साफ करके उनमें यथार्थ बातों का समावेश करने वाला, तथा अपने अन्दर सत्य और असत्य का विवेचन करने काला वह ऋषि होगा। सरस्वती के माध्यम से मोहम्मद साहब पर अवतीर्ण ग्रन्थ 'कुरान' को 'फुरकान' भी कहा जाता है।

'फुरकान' का अर्थ होता है—सत्य और असत्य का विवेचन करने वाला।

(छ) **अन्य जाति में आने वाला**—अन्तिम ऋषि के रूप में मोहम्मद साहब ही पूर्ण–रूपेण सिद्ध होते हैं, क्योंकि वह ईसा एवं उनके द्वारा उपदिष्ट जूजों एवं यहूदियों की जाति में नहीं पैदा हुए थे। ईसा का सम्बन्ध इसहाक की वंश–परम्परा से है, और मोहम्मद साहब का सम्बन्ध इस्माइल की वंश परम्परा से है।

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है, कि जिस ऋषि के होने की भविष्यवाणी बाइबिल के न्यू टेस्टामेण्ट में दी गई है, वह मोहम्मद साहब ही हैं।

अध्याय 6

अन्तिम बुद्ध-मैत्रेय

'ऋषि' को बौद्ध धर्म की भाषा में 'बुद्ध' कहा जाता है। अन्तिम बुद्ध के विषय में भविष्यवाणी का स्वरूप प्रस्तुत है, जिसे गौतम बुद्ध ने अपने मृत्यु काल के समय अपने प्रिय शिष्य नन्दा से बताया था। 'नन्दा! इस संसार में मैं न तो प्रथम बुद्ध हूँ और न तो अन्तिम बुद्ध हूँ। इस जगत् में सत्य तथा परोपकार की शिक्षा देने के लिए अपने समय पर एक और 'बुद्ध' आएगा। वह पवित्र अन्तःकरण वाला होगा। उसका हृदय शुद्ध होगा। ज्ञान और बुद्धि से सम्पन्न तथा समस्त लोगों का नायक होगा। जिस प्रकार मैंने जगत् को अनश्वर सत्य की शिक्षा प्रदान की है, उसी प्रकार वह भी जगत् को सत्य की शिक्षा देगा। जगत् को वह ऐसा जीवन मार्ग दिखाएगा, जो शुद्ध (अमिश्रित) तथा पूर्ण भी होगा। नन्दा! उसका नाम मैत्रेय होगा।'[1]

'बुद्ध' का अर्थ 'बुद्धि से युक्त' होता है। बुद्ध मनुष्य ही होते हैं, देवता आदि नहीं।[2]

बुद्ध की विशेषताएँ

बुद्ध ऐश्वर्यवान् एवं धनवान् होता है।
बुद्ध सन्तान से युक्त होता है।
बुद्ध स्त्री तथा शासन से युक्त होता है।
बुद्ध अपनी पूर्ण आयु तक जीवित रहता है।[3]

बुद्ध पद को प्राप्त व्यक्ति का यह सिद्धान्त होता है, कि अपनी सिद्धि के लिए अपना कार्य स्वयं करना चाहिए।[4] बुद्ध केवल धर्म प्रचारक होते हैं।[5] 'बुद्ध' को 'तथागत' भी कहा जाता है। जिस समय बुद्ध एकान्त

---

1. Gospel of Buddha, by Carus, P. 217
2. 'It is only a human being that can be a Buddha, 'a deity can not.'
—Mohammed in The Buddhist Scriptures, P. 1
3. Warren, P. 79.
4. The Dhammapada, S. B. E. Vol X. P. 67.
5. The Tatha gatas (Buddhas) are only preachers'.
—The Dhammapada, S. B. E. Vol. X. P. 67.

में रहता है, उस समय ईश्वर उसके साथियों के रूप में देवताओं और राक्षसों को भेजता है।[1] प्रत्येक बुद्ध अपने पूर्ववर्ती बुद्ध का स्मरण कराता है और अपने अनुयायियों को 'मार' से बचने की चेतावनी देता है। 'मार' का अर्थ बुराई एवं विनाश को फैलाने वाला होता है।[2] जिसे उर्दू भाषा में 'शैतान' तथा अंग्रेजी में 'डेविल' कहा जा सकता है। बुद्ध के अनुयायी पक्के अनुयायी होते हैं, जिन्हें कोई भी उनके मार्ग से विचलित नहीं कर सकता।[3] संसार में एक समय में केवल एक ही बुद्ध रहता है।[4]

बुद्ध के लिए सबसे आवश्यक इस बात का होना है, कि संसार का कोई भी व्यक्ति उसका गुरु न हो।[5]

प्रत्येक बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष का होना आवश्यक है। हर एक बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष के रूप में अलग–अलग वृक्ष निश्चित रहे हैं।

बुद्ध मैत्रेय की विशेषताएँ

मैत्रेय का अर्थ होता है—दया से युक्त।

बुद्ध होने के कारण अन्तिम बुद्ध मैत्रेय में भी बुद्ध की सभी विशेषताएँ पाई जाएँगी।

मैत्रेय बोधिवृक्ष के नीचे सभा का आयोजन करेगा।[7]

बोधिवृक्ष के दो प्रकार हैं—(1) सांसारिक वृक्ष, (2) स्वर्गीय वृक्ष।

बोधिवृक्ष के नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति होती है।

इस समय हम स्वर्गीय बोधिवृक्ष के विषय में कुछ विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. स्वर्गीय बोधिवृक्ष बहुत ही विस्तृत क्षेत्र में है।
2. ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध स्थिर दृष्टि से उस बोधिवृक्ष को देखता

---

1. Saddharma-Pundrika, S. B. E. Vol. XXI. P. 225.
2. Carus, P. 251.
3. Dhammapada, S. B. E. Vol. X. P. 67.
4. The Life and Teachings of Buddha, Anagarika Dhammapada, P. 84.
5. Romantic History of Buddha, by Beal, P. 241.
6. Maitreya means 'the merciful.'
   —Mohammed In the Buddhist, Scriptures, P. 15.
7. Takakusu, P. 213.
8. Romantic History of buddha, by Beal, P. 237.

है।[8]

सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा बुद्धों के गर्दन की हड्डी अत्यधिक दृढ़ होती थी, जिससे वे गर्दन मोड़ते समय अपने पूरी शरीर को हाथी की तरह घुमा लेते थे।[1] मैत्रेय में भी उक्त गुण का होना स्वाभाविक है।

अब हम यह सिद्ध करेंगे कि कौन ऐसा व्यक्ति है, जिस पर बुद्धों की सभी विशेषताएँ पूरी उतरती हैं और जो मैत्रेय की कसौटी पर खरा उतरता है।

कुरान में मोहम्मद साहब के ऐश्वर्यवान् और धनवान् होने के विषय में यह ईश्वरीय वाणी है कि तुम पहले निर्धन थे, हमने तुमको धनी बना दिया। मोहम्मद साहब ऋषि पद को प्राप्त करने के बहुत पहले धनी हो गए थे।[2]. मोहम्मद साहब के पास अनेक घोड़े थे। उनकी सवारी के रूप में प्रासिद्ध ऊँट 'अलकसवा' था, जिस पर सवार होकर मक्का से मदीना गए थे और बीस की संख्या में ऊँटनियाँ थीं, जिसका दूध मोहम्मद साहब और उनके बाल–बच्चों के पीने के लिए पर्याप्त था, साथ ही साथ सभी अतिथियों के लिए भी पर्याप्त था। ऊँटनियों का दूध ही मोहम्मद साहब व उनके बाल–बच्चों का प्रमुख आहार था। मोहम्मद साहब के पास 7 बकरियाँ थीं, जो दूध का साधन थीं। मोहम्मद साहब दूध की प्राप्ति के लिए भैंसें नहीं रखते थे, इसका कारण यह है कि अरब में भैंसें नहीं होतीं।[3] उनके सात बागें खजूर की थीं जो बाद में धार्मिक कार्यों के लिए मोहम्मद साहब द्वारा दे दी गई थीं।[4] मोहम्मद साहब के पास तीन भूमिगत सम्पत्तियाँ थीं, जो कई बीघे के क्षेत्र में थीं। मोहम्मद साहब के अधिकार में कई कुँए भी थे। इतना स्मरणीय है, कि अरब में कुआँ का होना बहुत बड़ी सम्पत्ति

---

1. Dhammapada, S. B. E. Vol. XI P. 64. footnote.
2. 'ववजदक आइलन फ़अ़ग्ना'
(और तुमको निर्धन पाया, बाद में तुमको धनी कर दिया)
—सूर : 93, आयत–8
3. Life of Mahomet-Sir William Muir,
(Abridge Edition), P. 545-546
4. Life of Mahomet-Sir William Muir,
(Abridge Edition), P. 547
5. Life of Mahomet-Sir William Muir,
(Abridge Edition), P. 548

समझी जाती है, क्योंकि वहाँ रेगिस्तानी भू–भाग हैं।[5] मोहम्मद साहब के बारह पत्नियाँ, चार लड़कियाँ, और 3 लड़के थे। बुद्ध के अन्तर्गत पत्नी और सन्तान का होना द्वितीय गुण है। मोहम्मद साहब के पूर्ववर्ती भारतीय बुद्धों में यह गुण नाममात्र को पाया जाता था, परन्तु मोहम्मद साहब के पास उसका बारह गुना गुण विद्यमान् था। उनकी पत्नियों के नाम हम नराशंस के वैदिक भाग में उल्लिखित कर चुके हैं।

मोहम्मद साहब ने शासन भी किया। अपने जीवन काल में ही उन्होंने बडे–बड़े राजाओं को पराजित करके उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। अरब के सम्राट् होने पर भी उनका भोज्य पदार्थ पूर्ववत् था।[1]

मोहम्मद साहब अपनी पूर्ण आयु तक जीवित रहे। अल्पायु में उनका देहावसान नहीं हुआ और न तो वे किसी के द्वारा मारे गए।

मोहम्मद साहब अपना काम स्वयं कर लेते थे।[2] उन्होंने अपने जीवन भर धर्म का प्रचार किया। उनके धर्म–प्रचारक स्वरूप की पुष्टि अनेक इतिहासकारों ने भी की है।[3] यद्यपि उनके विषय में यह बात तो अत्यधिक प्रसिद्ध है ही।

जिस समय मोहम्मद साहब एकान्त में रहते थे, उस समय कभी–कभी देवता और राक्षस भी उनके पास आ जाया करते थे।[4]

मोहम्मद साहब ने भी अपने पूर्ववर्ती ऋषियों का समर्थन किया, इस बात के लिए आप पूरा कुरआन देख सकते हैं। उदाहरण रूप में कुरआन में दूसरी सूरः में उल्लेख है कि 'ऐ आस्तिको! (मुसलमानो) तुम कहो कि हम ईश्वर पर पूर्ण आस्था रखते हैं और जो पुस्तक हम पर अवतीर्ण हुई, उस पर और जो–जो कुछ एब्राहीम, इस्माइल, इसहाक और

---

1. 'The fare of the desert seemed most congenial to him, even when he was sovereign of Arabia.'

—The Speeches and Table Talk of The Prophet Mohammad, by Lanepoole, P. XXX.

2. '.....mended his own cloths, milked the goats and waited upon himself.'

—Speeches and Table Talk of The Prophet Mohammad, by Lanepoole, P. XXIX.

3. Mohammad and Mohammedenism, by Rev. Bosworth Smith, P. 98

4. कुरआन, सूरः 72, आयत 1–19.

याकूब पर उनकी सन्तान (के ऋषियों) पर और जो कुछ मूसा और ईसा को दी गई, उन पर भी और ज़ो कुछ अनेक ऋषियों को, उनके पालक (ईश्वर) की ओर से उपलब्ध हुई उन पर भी हम आस्था रखते हैं और उन ऋषियों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं मानते और हम उसी एक ईश्वर के मानने वाले हैं।[1]

मोहम्मद साहब ने अपने अनुयायियों को शैतान से बचने की चेतावनी बार–बार दी थी। कुरआन में शैतान से बचने के लिए यह कहा गया है, कि जो शैतान को अपना मित्र बनाएगा, उसे वह भटका देगा और नारकीय कष्टों का मार्ग प्रदर्शित करेगा।[2]

मोहम्मद साहब के अनुयायी कभी भी मोहम्मद साहब के बताए हुए मार्ग से विचलित न होते हुए उनकी पक्की शिष्यता अथवा मैत्री में आबद्ध रहते हैं। मोहम्मद साहब का संग उनके अनुयायियों ने आमरण नहीं छोड़ा, भले ही उन्हें कष्टों का सामना करना पड़ा हो।[3]

संसार में जिस समय मोहम्मद साहब बुद्ध थे, उस समय किसी भी देश में कोई अन्य बुद्ध नहीं था। मोहम्मद साहब के बुद्ध होने के समय सम्पूर्ण संसार की सामाजिक और धार्मिक स्थिति, बहुत ही खराब थी, इस बात की पुष्टि 'कल्कि अवतार और मोहम्मद साहब' शोध पुस्तक में देख सकते हैं।

मोहम्मद का कोई भी गुरु संसार का व्यक्ति नहीं था। मोहम्मद साहब पढ़े–लिखे भी नहीं थे, इसीलिए उन्हें 'उम्मी' भी कहा जाता है। ईश्वर द्वारा मोहम्मद साहब के अन्तःकरण में उतारी गई आयतों की संहिता कुरआन है।[4] प्रत्येक बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष का होना आवश्यक है। किसी

---

1. कुरआन, सूरः 2, आयत 136.
2. कुरआन, सूरः 22, आयत--4.
3. **Mohammed and Mohammedenism,**
   —by Rev. Bosworth Smith, P. 110-111.
4. 'व इन्नहू ल तन्जोलु रब्बिल् आलमीन नजल बिहिरिहुल अमीनु अला कल्बिक लितकून मिनल्मुञ्जिअरीन।

   —कुरआन, सूरः 26, आयत 192–194

   (हे मोहम्मद! यह कुरआन समस्त लोकों के पालक का उतारा हुआ है, जिसे तुम्हारे दिल पर एक अमानतदार आत्मा लेकर उतरी है ताकि तुम सब लोगों को डराओ।')

बुद्ध के लिए बोधिवृक्ष के रूप में अश्वत्थ (पीपल), किसी के लिए न्यग्रोध (बरगद) तथा किसी बुद्ध के लिए उदुम्बर (गूलर) प्रयुक्त हुआ है। बुद्ध मैत्रेय के लिए जिस बोधिवृक्ष का होना बताया गया है, वह है—कड़ी और भारयुक्त काष्ठ वाला वृक्ष।[1]

मोहम्मद साहब के लिए बोधिवृक्ष के रूप में हुदेबिया स्थान में एक कड़ी और भारयुक्त काष्ठवाला वृक्ष था, जिसके नीचे मोहम्मद साहब ने सभा भी की थी।

'मैत्रेय' का अर्थ होता है—दया से युक्त। 16 अक्टूबर सन् 1930 लीडर पृ० 7 कालम 3 में एक बौद्ध ने 'मैत्रेय' का अर्थ 'दया' किया है। मोहम्मद साहब दया से युक्त थे। इसी कारण से मुहम्मद साहब को 'रहमतुल्लिल्लोमीन' कहा जाता है।[2] जिसका अर्थ है—'समस्त संसार के लिए दया से युक्त।' बुद्धों के अन्तर्गत पाई जाने वाली सभी विशेषताएँ मोहम्मद साहब में भी विद्यमान थीं।

मोहम्मद साहब ने भी स्वयं में एक वृक्ष को देखा था, जो ईश्वर के सिंहासन के दाहिनी ओर विद्यमान था, जो इतने बड़े क्षेत्र में था, जिसे एक घुड़सवार लगभग सौ वर्षों में भी उसकी छाया को पार नहीं कर सकता था।[3]

मोहम्मद साहब ने भी स्वर्ग में वृक्ष को आँख बिना गिराए हुए देखे थे।[4]

मैत्रेय के विषय में जो यह कहा गया है कि किसी भी तरफ मुड़ते समय वह अपने शरीर को पूरा घुमा लेगा। यही बात मुहम्मद साहब के भी विषय में थी, कि वह बातचीत करने में किसी मित्र की ओर देखते समय अपने शरीर को पूरा घुमा लेते थे।[5]

इस प्रकार यह सिद्ध होता है, कि बौद्ध ग्रन्थों में जिस मैत्रेय के होने की भविष्यवाणी की गई है, वह अन्तिम ऋषि ही हैं।

---

1. 'According to some of the modern Buddhist scholars the Bo-tree of the Buddha Maitreya is the 'Ironwood tree.'
—Mohammed in the Buddhist scriptures, Page 64.

2. 'वमा अर्सल्नाक इल्ला रहमतल्लिल्आलमीन,
—कुरआन, सूरः 11, आयत 107.
(हे मोहम्मद! हमने तुमको समस्त लोकों के लिए दया बनाकर भेजा)

3. 'In paradise there is a tree (Such) that a rider can not cross its shade even in hundred years.'
—Mohammed in the Buddhist Scriptures, Page 79

4. 'मा जाग़ल् बसरुवमा तग़ा', —कुरआन, 53.17.
(आँख न मुड़ी न बढ़ी।)

5. 'If he turned in conversation towards a friend, he turned not partially, but with his full face, and his whole body.'
—The Life of Mohammat, by Sir William Muir Page 511-512.

प्रकाशक :
ख़ालिद बुक डिपो, कोटा